Ratnakarand Shravakachar

Author

Jain Hemant Lodha

Mobile: 9325536999

Email: lodhah@gmail.com

Copyright: Author

Edition: 1-2022

Online Price: 200

ISBN: 978-93-5607-319-7

Forward…..

Ratnakarand Shravakachar is originally written by Acharya Shri Samantbhadra Swami in Sanskrit around AD 2nd century. It has 159 sutra arranged in 7 chapters. Hindi and English translation is done by many scholars and available in print books and online on internet. To understand it in more depth I have translated in simple Hindi Doha. Earlier I have translated Bhagvad Geeta, Astavakra Geeta, Chanakya Niti, Samansuttam and Tattvarthsutra in Hindi Doha. Translation from one language to another can never give 100% understanding of original work so I seek forgiveness for any mistake in doing so.

I express my sincere thanks to all the divines forces and my Gurus who are giving me continuous aspiration to go through ancient spiritual literatures, understand those and translate in simple Hindi poetry in form of DOHA. I specially thanks to Pandit Viiin Jain Shastri and Dr. Sanjeev Godha for their online discourses on various Jainism Agams which helps me in better understanding of Jain Agams.

रत्नकरण्डश्रावाकाचार में चार शब्द है। रत्न jewels, करण्ड box, श्रावक householder, आचार conduct. श्रावक का आचार कैसा होना चाहिए उस पर आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने १५० श्लोक रत्नों की पेटी के रुप में हमें प्रदान किये है।

Happy reading

Jain Hemant Lodha
Nagpur
12th Jan 2022

Wikipedia…

रत्नकरण्ड श्रावकाचार एक प्रमुख जैन ग्रन्थ हैं जिसके रचियता आचार्य समन्तभद्र हैं। इस ग्रंथ में जैन श्रावक की चर्या का वर्णन है। आचार्य समन्तभद्र ने जैन श्रावक कैसा होना चाहीए इसके बारे में विस्तार से बताया है|

Ratnakarand Shravakachar is a Jain text composed by Aacharya Samantbhadra Swamy (second century CE), an acharya of the Digambara sect of Jainism. Aacharya Samantbhadra Swamy was originally from Kanchipuram, Tamil Nadu. Ratnakaranda śrāvakācāra is the earliest and one of the best-known śrāvakācāra.

English translation of the Ratnakaranda śrāvakācāra (1917) by Champat Rai Jain

Author Aacharya Samantbhadra Swamy

Language Sanskrit

Period 2nd Century CE

A śrāvakācāra discusses the conduct of a Śrāvaka or Jain lay practitioner.

Jain Hemant Lodha

Mr. Hemant Lodha, a chartered accountant by profession is an avid reader whose library interests include philosophy, spirituality, relationship building, leadership skills & management skills. Born in Jodhpur, to a respected family of limited means, he has been all over the globe before settling in Nagpur in 2002.

He has authored many books such as 'Words of Wisdom', 'Nectar of Wisdom', 'Shrimad Bhagwat Geeta Roopkavita', 'Ashtavakra Mahageeta Roopkavita', 'Kahi Ankahi', 'Samansuttam', 'Chankya Niti' 'A to Z Entrepreneurship' 'A to Z of Leadership', 'Nectar of Wisdom-2', '5 Elements of Organizational Excellence', 'Tattvarthsutra'

Being socially active, he is associated with several organizations and has founded "Helplink Charitable Trust" with a motto to LINK THE NOBLE AND THE NEEDY, mainly working in the field of education for deprived children.

He is presently working as a Managing Director of SMS Envocare Limited, a group company of SMS Limited.

He can be easily reached at www.hemantlodha.com

INDEX

1) अध्याय १ सम्यग्दर्शन ---------- 1 – 41

2) अध्याय २ ज्ञानाधिकारो---------- 42 – 47

3) अध्याय ३ चारित्र ---------- 48 – 68

4) अध्याय ४ गुणव्रत---------- 69 – 92

5) अध्याय ५ शिक्षाव्रत ---------- 93 – 124

6) अध्याय ६ सल्लेखना ---------- 125 – 139

7) अध्याय ७ –प्रतिमाएँ ----------140 – 155

अध्याय १ सम्यग्दर्शन - Chapter 1 Right Faith

नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते ॥१॥

सब कर्मों का नाश किया, करू नमन वर्द्धमान।
लोक-अलोक दर्पण सा, झलके केवलज्ञान॥१॥

जिन्होंने पाप को आत्मा से नष्ट कर दिया, जिनका केवलज्ञान दर्पण के समान अलोक व तीनों लोकों में झलकता है ऐसे अन्तिम तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान स्वामी को नमस्कार है।

I bow to Shri Vardhman Mahavir who has shredded all karma from his soul and whose omniscient knowledge reflects like mirror in alokakash as well three lokas.

देशयामि समीचीनं, धर्मं कर्मनिबर्हणम्।
संसारदु:ख़त: सत्तवान्, ये धरत्युत्तमे सुखे ॥२॥

कहता सच्चा धर्म हूँ, करे कर्म का नाश।
संसार के दुख से निकल, मिले सुख, मोक्ष वास॥२॥

मैं उस सच्चे धर्म को कहता हूँ जो कर्मों का विनाश करने वाला है व जीवों को संसार के दु:खों से निकालकर मोक्ष के श्रेष्ठ सुख में पहुँचाने वाला है।

I will preach true dharma which can destroy all karma and can free from all pains and miseries and installs the soul to supreme bliss.

सद्दृष्टिज्ञानवृत्तानि, धर्म धर्मेश्वरा विंदु:।
यदीयप्रत्यनीकानि, भवन्ति भवपद्धति:॥३॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र, जिन धर्म का मार्ग।
मिथ्यादर्शन ज्ञान चरित्र, जग भ्रमण का मार्ग॥३॥

जिनेश्वर के अनुसार सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र धर्म का मार्ग है इसके विपरीत मिथ्या दर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र संसार भ्रमण का मार्ग है।

Tirthankars have described right faith, right knowledge and right conduct as path to liberation and opposite path of wrong faith, wrong knowledge and wrong conduct leads to continuous transmigration in this world.

श्रद्धानं परमार्थानामाप्तगमतपोभृतां।
त्रिमूढापोढमष्टांगं सम्यग्दर्शनमस्मयं॥४॥

सम्यग्दर्शन श्रद्धान है, गुरु शास्त्र और देव।
मूढ़ता और मद नहीं, अष्ट अंग को ठेव॥४॥

तीन मूढताओं से रहित, आठ अंगो सहित और आठ मदों से रहित सच्चे देव, शास्त्र एवं गुरु के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा है।

Without three kinds of wrong knowledge, with eight types of right faith and without eight kinds of pride having faith in true god, true scriptures and true teacher is called right faith.

आप्तेनोच्छिन्नदोषेण सर्वेज्ञेनागमेशिना।
भवितव्यं नियोगेन नान्यथा ह्याप्तता भवेत्॥५॥

हितउपदेशी, दोष ना, सर्वज्ञ व वीतराग।
देवपना हो नियम से, केवली के न राग॥५॥

आप्त को अठारह दोषों से रहित वीतराग, सर्वज्ञ और आगम का हितोपदेशी नियम से होना चाहिये क्योंकि अन्य प्रकार से देवपना नहीं हो सकता।

The true god as a rule should be free from eighteen faults and passionless, omniscient and deliverer of sermons.

क्षुत्पिपासाजरातङ्कजन्मान्तकभयस्मयाः।
न रागद्वेषमोहाश्च, यस्याप्तः स प्रकीर्त्यते॥६॥

भूख, प्यास, रोग न जरा, जन्म, मरण, भय न राग।
गर्व, राग, द्वेष, मोह ना, अरति न चिन्ता आग॥

निद्रा, और आश्चर्य नहीं, स्वेद, रोष ना खेद।
जिन अठारह दोष नहीं, आगम का यह वेद॥६॥

सच्चे देव १८ दोषों से रहित होते है। भूख, प्यास, बुढ़ापा, रोग, जन्म, मरण, भय, गर्व, राग, द्वेष, मोह, चिन्ता, अरति, निद्रा, आश्चर्य, स्वेद, रोष और खेद।

The god is free from 18 flaws. Hunger, thirst, old age, disease, birth, death, fear, pride, attachment, aversion, infatuation, worry, disliking, sleep, surprise, hatred, fury, sorrow.

परमेष्ठी परंज्योतिर्विरागो विमलः कृती।
सर्वज्ञोऽनादिमध्यान्तः, सार्वः शास्तोपलाल्यते॥७॥

परम पद व ज्योति परम, मलरहित, केवल ज्ञान।
आदि मध्य और अंत रहित, हित उपदेशक जान॥७॥

आप्त ही है- परमेष्ठी- परम पद में स्थित, परम ज्योति- केवलज्ञानी, रागरहित, मलरहित, कृतकृत्य, सर्वज्ञ, आदि-मध्य-अंत रहित, सर्वहितकर्ता, और हितोपदेशक।

True God is, highest status, omniscient, free from all kind of desires, pure, devoid of beginnings, end and middle, friend of all living beings and a teacher.

अनात्मार्थं विना रागैः, शास्ता शास्ति सतो हितम् ।
ध्वनन् शिल्पिकरस्पर्शान्मुरजः किमपेक्षते॥८॥

प्रयोजन व आस नहीं, हित उपदेश हो ख़ास।
ज्यूँ संगीतज्ञ हाथ लगे, ठोल बजे बिन आस॥८॥

हितोपदेशक बिना अभिलाषा के अपना प्रयोजन न होने पर भी भव्यजीवों के हित को कहते हैं जैसे मृदंग संगीतज्ञ के हाथ लगाने पर बिना किसी अपेक्षा बज उठता है।

Just as drum gives sound without any expectation in consequence of the contact of drummers hand, so does the teacher reveals truth without any expectation.

आप्तोपज्ञमनुल्लङ्ध्य, मदृष्टेष्टविरोधकं।
तत्त्वोपदेशकृत्सार्वं, शास्त्रं कापथघट्टनं॥९॥

शास्त्र वह जो आप्त कहे, तत्त्व का हो ज्ञान।
विरोध ना, हितकर रहे, मिथ्या खंडन जान॥९॥

तीर्थंकर भगवान द्वारा कहा गया उल्लंघनरहित, विरोधरहित, तत्त्व का उपदेश करने वाला, सबका हितकारी और मिथ्या मार्ग का खण्डन करने वाले को शास्त्र कहते है।

True scripture is word of Tirthankara, which can't be over ridden, nor can be opposed, which reveals the true nature of substances, which is beneficial to all and destroys the wrong faith.

विषयाषावशातीतो, निराम्भोऽपरिग्रह:।
ज्ञानध्यानतपोरत्नस्तपस्वी स प्रशस्यते ॥१०॥

गुरु उत्तम जो विषय रहित, परिग्रह नहीं जान।
लीन रहे जो हर समय, तप ध्यान हो ज्ञान॥१०॥

प्रशंसनीय गुरु वह है जो विषयरहित, आरम्भरहित, परिग्रहरहित और ज्ञान, ध्यान और तप में लीन है।

True teacher is who is desireless, beginningless and possessionsless and who is always absorbed in study, meditation and austerities.

इदमेवेदृशमेव, तत्त्वं नान्यन्न चान्यथा।
इत्यकम्पायसाम्भोवत् सन्मार्गेऽसंशया रुचि:॥११॥

है यही पर अन्य नहीं, तत्त्व मोक्ष का ज्ञान।
पानी ज्यूँ तलवार पर, नि:शंकित अंग है जान॥

तत्त्व स्वरुप और मोक्षमार्ग के विषय में लोहे की तलवार पर चढ़े हुए लोगे के पानी के समान अटल श्रद्धा होना की यह ही है, ऐसा ही है, अन्य नहीं है और अन्य प्रकार भी नहीं है, यही नि:शंकित अंग है।

Having unshakable faith like the unwavering lustre of the sharp edge of sword, in the nature of substances explained in Jain agam is called Nishankit anga.

कर्मपरवशे सान्ते दु:खारन्तरितोदये।
पापबीजे सुखेनास्था श्रद्धानाकांक्षणा स्मृता॥१२॥

दुख कर्म के अधीन है, सांसारिक सुख पाप।
आकांक्षा सम्यग्दृष्टि नहीं, नि:कांक्षित अंग जाप॥१२॥

सम्यग्दृष्टि जीव कर्मो के अधीन दु:ख और पापजनित सांसारिक सुख में आस्था ना रख के अपने नि:कांक्षित अंग को सुरक्षित रखते है।

The souls with right faith knows well that all suffering is due to rise of karma and sensual pleasures ultimately leads to sin, they safe guard their right faith with nikanshit anga.

स्वभावतोऽशुचौ काये, रत्नत्रयपवित्रिते।
निर्जुगुप्सा गुणप्रीतिर्मता निर्विचिकित्सता॥१३॥

अपवित्र यह शरीर है, रत्नत्रय पवित्र जान।
तन से ग्लानि हो नहीं, निर्विचिकित्सा पहचान॥१३॥

यह शरीर स्वभाव से अपवित्र पर रत्नत्रय से पवित्र जानकर ग्लानि रहित गुणों में प्रेम होना निर्विचिकित्सा अंग माना गया है।

The body is impure by nature but pure by virtues of three jewels, by knowing this not to have feeling of disgust is nirvichikitsa anga of right faith.

कापथे पथिदु:खानां, कापथस्थेऽप्यसम्मति:।
असंपृत्कि रनुत्कीर्तिरमूढा दृष्टिरुच्यते॥१४॥

मिथ्यात्व ही कुमार्ग है, पथ नहीं कल्याण।
सम्यग्दृष्टि यह जानता, अमूढदृष्टि पहचान॥१४॥

सम्यग्दृष्टि जीव मिथ्यात्व के मार्ग को कुमार्ग जानता है और उसे कल्याण का मार्ग नहीं समझता व शरीर के अंगों से किसी प्रकार की प्रशंसा नहीं करके अपने अमूढदृष्टि के अंग को दृढ़ रखता है।

Non-recognition of wrong path and not giving any kind of approval to those who are on wrong path is amudhdrashti anga.

स्वयं शुद्धस्य मार्गस्य, बालाशक्तजनाश्रयाम।
वाच्यतां यत्प्रमार्जन्ति, तद्वदन्त्युपगूहनं॥१५॥

रत्नत्रय पथ निर्मल है, दोष हो जब अज्ञान।
सम्यग्दृष्टि प्रकट न करे, उपगूहन यह जान॥१५॥

रत्नत्रयरूप मोक्ष मार्ग स्वभाव से निर्मल है लेकिन अज्ञानी द्वारा उसमें कोई दोष उत्पन्न होता है तो सम्यग्दृष्टि जीव उस दोष को छुपाकर उपगूहन अंग को दृढ़ करते है।

To hide the ridicule raised by ignorant about path of Jainism is upguhun anga.

दर्शनाच्चरणाद्वापि चलतां धर्मवत्सलै:।
प्रत्यवस्थापनं प्राज्ञै: स्थितीकरणमुच्यते॥१६॥

दर्शन चारित्र से विचलित, धर्मज्ञ करे प्रयास।
हो पुन: फिर स्थापना, स्थितिकरण में वास॥१६॥

सम्यग्दर्शन अथवा सम्यक्चारित्र से चलायमान होनेवाले लोगों का धर्म वत्सल जनों के द्वारा पुन: स्थापना करने को प्राज्ञ पुरुष स्थितीकरण अंग कहते है।

When someone is wavering from right path or right conduct and someone else is helping in reestablishing there in, wise call it stithikaran anga.

स्वयूथ्यान्प्रति सद्भावसनाथापेतकैतवा।
प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं वात्सल्यमभिलप्यते॥१७॥

सहधर्मी के प्रति रखे, स्नेहमयी सद्भाव।
यथोचित प्रवृत्ति कहा, वात्सल्य अंग प्रभाव॥१७॥

अपने साधर्मी समाज के प्रति सद्भावसहित छलकने रहित यथोचित स्नेहमयी प्रवृत्ति को वात्सल्यअंग कहते है।

Expressing love and respect with co-religionists with good intention is called vatsalya anga.

अज्ञानतिमिरव्याप्तिमपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमाहात्म्यप्रकाश: स्यात्प्रभावना॥१८॥

यथासंभव उपाय करे, दूर करे अज्ञान।
फैले जिनशासन जगत, प्रभावना अंग जान॥१८॥

अज्ञानरुप अंधकार के प्रसार को यथासंभव उपायों के द्वारा दूर करके जिन शासन के प्रभाव को जगत मे प्रकाशित करना प्रभावना अंग है।

To establish the glory of Jainism by removing dense cloud of ignorance is Prabhavana anga.

तावदञ्जनचौरोऽङ्गे ततोऽनन्तमती स्मृता।
उद्दायनस्तृतीयेऽपि तुरीये रेवती मता॥१९॥

ततो जिनेन्द्रभक्तोऽन्यो वारिषेणस्ततः परः।
विष्णुश्च वज्रनामा च शेषयोर्लक्ष्यतां गतौ॥२०॥

अंजन चोर प्रथम अंग में, अनन्तमती की ख्यात।
उद्दायन राजा तीसरे, करे रेवती बात॥१९॥

जिनेन्द्र भक्त अंग पाँचवा, वारिषेण की ख्यात।
विष्णुकुमार मुनि सातवें, वज्रकुमार मुनि बात॥२०॥

उपर्युक्त आठ अंगों में प्रथम में अंजन चोर, दूसरे में अनन्तमती, तीसरे में उद्दायन राजा, चौथे में रेवती रानी, पाँचवें में जिनेन्द्रभक्त श्रेष्ठ, छठे में वारिषेण राजकुमार, सातवें में विष्णुकुमार मुनि और आठवें अंग में वज्रकुमार मुनि प्रसिद्धि को प्राप्त हुए।

8 persons attained fame in following 8 anga

1. Nishankit- Anjan thief
2. Nikankshit- Anantmati
3. Nirvachikitsit - Uddayan king
4. Amoodhdrishti- Queen Revati
5. Upguhan- Jinendra bhakt shreshtha
6. Stithikaran- Prince Varishen
7. Vatsalya- Muni Vishnukumar
8. Prabhavana- Muni Vajrakumar

नाङ्गहीनमलं छेतुं दर्शनं जन्मसन्ततिम्।
न हि मन्त्रोऽक्षरन्यूनो निहन्ति विषवेदनाम्॥२१॥

हो कमी एक भी अंग में, मुक्ति नहीं संसार।
ज्यूँ अक्षर कम मन्त्र में, विष की ना है मार॥२१॥

उक्त आठ अंगो से किसी भी अंग से हीन सम्यग्दर्शन संसार की परंपरा को छेदने के लिए समर्थ नहीं है जैसे एक अक्षर भी न्यून मन्त्र विष की वेदना को नष्ट करने के लिए समर्थ नहीं होता।

As an incomplete mantra even by one letter is not capable of removing venom, so is the faith which is imperfect in any of the limb is not capable to pierce the life cycle.

आपगासागरस्नानमुच्चयः सिकताश्मनाम्।
गिरिपातोऽग्निपातश्च लोकमूढं निगद्यते॥२२॥

नहा समुद्र या गंगा, पूजे पत्थर ढेर।
अग्नि प्रवेश, पर्वत गिरे, लोकमूढता फेर॥२२॥

धर्म बुद्धि से गंगादि नदियों और समुद्रों में स्नान करना, बालु और पत्थरों का ऊँचा ढेर लगाना, पर्वत से गिरना, अग्नि में प्रवेश करना आदि लोकमूढता कहा जाता है।

Bathing in Ganga or oceans, setting up heaps of sand and stones for worship, jumping from mountain or into the fire is Lokmudhata.

वरोऽपलिप्सयाऽऽशावान् रागद्वेषमलीमसाः।
देवता यदुपासीत देवतामूढमुच्यते॥२३॥

आशा तृष्णा के वश में, कुगुरू जिसमें राग।
ऐसे देव का पूजना, देवमूढता आग॥२३॥

आशा तृष्णा के वशीभूत होकर वर पाने की इच्छा से राग द्वेष से मलिन देवताओं की उपासना देवमूढता है।

Worshipping with desires to obtain favour of deities whose mind is full of personal likes and dislikes is called the Devmudhata.

सग्रन्थाऽऽरम्भहिंसानां संसारावर्तवर्तिनाम्।
पाषण्डिनां पुरस्कारो ज्ञेयं पाषण्डिमोहनम्॥२४॥

आदर करता पाखंडी, हिंसा युक्त संसार।
परिग्रह आरंभ में फँसा, पाखंडमूढ विचार॥२४॥

परिग्रह, आरंभ और हिंसा से युक्त संसार के गोरखधंधे रुप भँवरों के मध्य पड़े हुए पाखंडी लोगों का आदर करना पाखंडिमूढता है।

Worshipping false ascetics who continue to have possession, beginning and violences is called Gurumudhata.

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धिं तपों वपु:।
अष्टावाश्रित्यमानित्वं स्मयमाहुर्गतस्मया:॥२५॥

ज्ञान भक्ति कल जाति बल, ऋद्धि तन अभिमान।
आठ मद करते जन जो, आचार्य न सम्मान॥२५॥

ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप और शरीर इन आठ बातों का अभिमान करने को गर्वरहित आचार्य मद कहते है।

Acharya have defined 8 prides. Knowledge, worshipping, family, tribe, power, accomplishments, austerity and body.

स्मयेन योऽन्यानयेति धर्मस्थान् गर्विताशयः।
सोऽत्येति धर्ममात्मीयं न धर्मो धार्मिकैर्विना॥२६॥

तिरस्कार धर्मात्मा, व्यक्ति युक्त अभिमान।
हो धर्मी बिना धर्म नहीं, मत कर धर्म अपमान॥२६॥

अभिमानयुक्त चित्त वाला जो पुरुष अन्य धर्मात्मा का तिरस्कार करता है वह अपने ही धर्म का अपमान करता है क्योंकि धर्मात्माओं के बिना धर्म नहीं होता।

Disrespecting person with virtues in ego, is disrespecting religion itself because religion is because of virtuous people only.

यदि पापनिरोधोऽन्यसम्पदा किं प्रयोजनम् ।
अथ पापास्रवोऽस्त्यन्यसम्पदा किं प्रयोजनम्॥२७॥

क्या प्रयोजन सम्पत्ति का, जब पाप का निरोध।
क्या प्रयोजन सम्पत्ति का, जब आस्रव न विरोध॥२७॥

अगर पाप का निरोध है तो अन्य सम्पत्ति का क्या प्रयोजन और पाप का आस्रव है तो अन्य सम्पत्ति का क्या प्रयोजन?

What is the use of possessions if influx is stopped and what is the use of possessions if influx is continuing?

सम्यग्दर्शनसम्पन्नमति मातङ्गदेहजम्।
देवा देवं विदुर्भस्मगूढाङ्गारानतरौजसम्॥२८॥

जन्म भले नीच कुल हो, जब सम्यग्दर्शक यार।
तीर्थंकर भी पूज्य कहे, राख ढकी अंगार॥२८॥

सभी तीर्थंकर देव सम्यग्दर्शन सहित चाण्डालकुल में पैदा हुए जीव को राखसहित अंगार के भीतरी प्रकाश के समान पूज्य कहते है।

The propagators of dharma describe even a low caste man possessing right faith as divine being it's like fire hidden by ashes on charcoal.

श्वापि देवाऽपि देवः श्वा जायते धर्मकिल्विषात्।
कापि नाम भवेदन्या सम्पद्धर्माच्छरीरिणाम्॥२९॥

हो कुत्ता भी, देव बने, देव बनता श्वान।
धर्म से श्रेष्ठ कुछ नहीं, धर्म आचरण मान॥२९॥

धर्म और पाप से क्रमशः कुत्ता भी देव और देव भी कुत्ता हो जाता है। इसलिये जीवों के धर्म से अन्य और कौन सी सम्पत्ति श्रेष्ठ हो सकती है? इसलिये धर्म का ही आचरण करना चाहिये, अन्य नहीं।

Because of virtue a dog can become deity and because of sin a deity can become dog, so there is no wealth greater than Dharma.

भयाशास्नेहलोभाच्च कुदेवाऽऽगमलिङ्गिनाम्।
प्रणामं विनयं चैव न कुर्युः शुद्धदृष्टयः॥३०॥

भय आस प्रेम लोभ से, न विनय ना प्रणाम।
कुदेव शास्त्र व गुरु का, लेता न कभी नाम॥३०॥

शुद्ध सम्यग्दृष्टि जीव भय, आशा, प्रेम और लोभ से कुदेव, कशास्त्र व कुगुरु को विनय और प्रणाम न करे।

A person with right faith shall not show reverence to false deity, false scriptures or false teacher due to fear, hope, love or greed.

दर्शनं ज्ञानचारित्रात्साधिमानमपाश्नुते।
दर्शनं कर्णधारं तन्मोक्षमार्गे प्रचक्षते॥३१॥

ज्ञान चारित्र से अधिक, सम्यग्दर्शन महान।
कर्णधार इसको कहा, मोक्षमार्ग पहचान॥३१॥

सम्यग्दर्शन की ज्ञान और चारित्र की अपेक्षा प्रधानता से उपासना की जाती है क्योंकि सम्यग्दर्शन को मोक्षमार्ग में कर्णधार कहा जाता है।

Right faith takes precedence over knowledge and conduct because right faith acts as a pilot on the path of liberation.

विद्यावृत्तस्य सम्भूति स्थितिवृद्धि फलोदया:।
न सन्त्यसति सम्यक्त्वे बीजाभावे तरोरिव ॥३२॥

उत्पत्ति, वृद्धि और फल, चारित्र और ज्ञान।
सम्यक्त्व ही बीज है, बीज बिना ना धान॥३२॥

जैसे बीज के अभाव में वृक्ष की उत्पत्ति, वृद्धि और फल की प्राप्ति नहीं होती उसी प्रकार सम्यक्त्व के अभाव में ज्ञान और चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि व फल की प्राप्ति नहीं होती।

Just as one can't have origin or growth of tree and fruits without seed, it is not possible to have right knowledge and right conduct without right faith.

गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो नैव मोहवान्।
अनगारो गृही श्रेयान् निर्मोहो मोहिनो मुनेः॥३३॥

सम्यक् गृहस्थ स्थित रहे, मिथ्या मुनि कमजोर।
सम्यक् गृहस्थ श्रेष्ठ कहा, मोक्ष मार्ग का मोर॥३३॥

मोह मिथ्यात्व से रहित गृहस्थ मोक्षमार्ग में स्थित है परन्तु मोह मिथ्यात्व सहित मुनि मोक्षमार्ग में स्थित नहीं है। मोही मिथ्यादृष्टि मुनि के अपेक्षा मोहरहित सम्यग्दृष्टि गृहस्थ श्रेष्ठ है।

A householder with right faith is fixed on the path of liberation but an ascetic is not fixed if he has wrong faith. A right faith householder is better than wrong faith sant.

न सम्यक्त्वसमं किञ्चित् त्रैकाल्ये त्रिजगत्यपि।
श्रेयोऽश्रेयश्च मिथ्यात्वसमं नान्यत्तनूभृताम्॥३४॥

तीन काल, सर्व लोक में, सम्यक् ही कल्याण।
मिथ्या दर्शन उचित नहीं, मंगल नहीं है जान॥३४॥

प्राणियों के लिये तीनों काल व तीनों लोक में सम्यग्दर्शन के समान कल्याणकारी व मिथ्यादर्शन के समान अकल्याणकारी कुछ नहीं है।

All the time and in all the world there is nothing more auspicious than right faith and nothing Inauspicious than wrong faith.

सम्यग्दर्शनशुद्धा नारक तिर्यङ् नपुंसक स्त्रीत्वानि।
दुष्कुल विकृताल्पायुर्दरिद्रतां च व्रजन्ति
नाप्यव्रतिका:॥३५॥

नरक, त्रियंच, नपुंसक, स्त्री, नीच, विकृत न होय।
सम्यक्सहित हो व्रत रहित, अल्पवय, निर्धन न होय॥३५॥

सम्यग्दर्शन सहित जीव व्रतरहित होने पर भी नारक, तिर्यंच, नपुंसक, स्त्रीपन, नीचकुल, विकलांगता, अल्पायु और दरिद्रता को प्राप्त नहीं होता है।

A person without vows but with right faith don't born as infernal being, animal, neuter gender, women, low caste, deformity, short life and poor.

ओजस्तेजो विद्यावीर्ययशोवृद्धिविजयविभवसनाथा:।
महाकुला महार्था मानवतिलका भवन्ति दर्शनपूता:॥३६॥

ओज, तेज, विद्या, वीर्य, यश, मनु सम्यग्दृष्टि महान।
विजय, वैभव, कुल, उन्नति, पुरुषार्थ की शान॥१.३६॥

सम्यग्दृष्टि मनुष्य गति जीव उत्साह, तेज, विद्या, वीर्य, यश, वृद्धि, विजय और वैभव से युक्त महान कुल में जन्म, पुरुषार्थी व मनुष्यों में उत्तम होते है।

Those with right faith become the Lords of splendour, energy, wisdom, progress, fame, wealth, victory and greatness. They are born in high families and possess the ability to realise the highest dharma, Artha Kama and moksha of life and they are the best of humans.

अष्टगुणपुष्टितुष्टा दृष्टिविशिष्टा प्रकृष्टशोभाजुष्टाः।
अमराप्सरसां परिषदि चिरं रमन्ते जिनेन्द्रभक्ताः स्वर्गे ॥३७॥

शोभा युक्त व आठ ऋद्धि, सम्यग्दृष्टि संयोग।
अप्सरा की सभा मिले, चिरकाल करे भोग॥१.३७॥

सम्यग्दर्शन से युक्त जिनेन्द्र भक्त देव अणिमा महिमा आदि आठ ऋद्धि से पूर्ण, प्रमुदित व उत्कृष्ट शोभा से संयुक्त होकर देवों और अप्सरा की सभाओं में चिरकालिक तक आनन्द का उपभोग करते है।

Those who have the right faith are born as celestial beings where they become the devotees of Lord Jinendra and endowed with eight kinds of miraculous powers and great splendour, enjoy themselves for long millenniums in the company of Devas and devanganas. OBJ OBJ

नवनिधिसप्तद्वयरत्नाधीशाः सर्वभूमिपतयश्चक्रम।
वर्तयितुं प्रभवन्ति स्पष्टदृशः क्षत्रमौलिश्खरचरणाः॥३८॥

नौ निधि चौदह रत्न हो, चक्रवती संयोग।
सम्यग्दृष्टि राज करे, मुकुट चरण का योग॥१.३८॥

निर्मल सम्यग्दृष्टि जीव नौ निधि व चौदह रत्न का स्वामी और सर्वभूमि के अधिपति होकर सुदर्शन चक्र को चलाने में समर्थ होते है। नमस्कार करते हुए राजाओं की मुकुटों की माला से उनके चरण व्याप्त रहते है।

Those who are endowed with the right faith are attended upon by great emperors and kings, they acquire all the most wonderful things in the world, the entire earth comes under their sway and they are competent to command all men.[OBJ]

अमरासुरनरपतिभिर्यमधरपतिभिश्च नूतपादाम्भोजा:।
दृष्ट्या सुनिशचितार्था वृषचक्रधरा भवन्ति लोकशरण्या:॥३९॥

अमर, असुर, यम व नर पति, तत्त्व व दर्शन ज्ञान।
धर्मचक्र धारण करे, लोक शरण ले जान॥१.३९॥

सम्यग्दर्शन द्वारा जिन्होंने तत्त्वार्थ भलिभाँति समझा है वे अमरपति, असुरपति, नरपति व यमधरपति से चरणकमल पूजे जाते हैं जो लोक को शरण देने के योग्य है ऐसे धर्मचक्र के धारक तीर्थंकर होते है।

By virtue of right faith man acquire the supreme status of Tirthankara, the master who knows all things well, whose feet are worshipped by the rulers of Devas, Lord of Asuras and Kings of man, as well as by holy saints, who is the support of dharma and the protector of all living beings in the three worlds. OBJ

शिवमजरमरुजमक्षयमव्याबाधं विशोकभयशङ्कम्।
काष्ठागतसुखविद्याविभवं विमलं भवन्ति दर्शनचरणा:॥४०॥

जर जरा व बाधा रहित, भय शोक नहीं भाव।
सुख विद्या शंका रहित, निर्मल मोक्ष की छाँव॥१.४०॥

सम्यग्द्रष्टि जीव अजर, अरुज, अक्षय, अव्याबाध, शोक, भय, शंकारहित चरमसीमा को प्राप्त सुख और ज्ञान के वैभव वाले निर्मल शिव मोक्ष को प्राप्त होते है।

Those who take refuse in right faith attain to the supreme seat, which is free from old age, disease, destruction, decrease, grief, fear and doubt and implies unqualified perfection in respect of wisdom and bliss and freedom from all kinds of impurities of karma.

देवेन्द्रचक्रमहिमानममेयमानं राजेन्द्रचक्रमवनीन्द्रशिरोऽर्चनीयम्।
धर्मेन्द्रचक्रमधरीकृतसर्वलोकं लब्धवा शिवं च जिनभक्तिरुपैति
भव्यः॥४१॥

देवेन्द्र व राजेन्द्र चक्र भी, धर्मेन्द्र चक्र का योग।
तीर्थंकर का पद मिले, सम्यग्दृष्टि संयोग॥१.४१॥

इस प्रकार जिनेंद्र देव की भक्ति करने वाला सम्यक दृष्टि भव्य जीव अपरिमित प्रमाण वाली देवेन्द्र समूह की महिमा को पाकर मुकुट बद्ध राजाओं के मस्तक से अर्चनीय राजेंद्र चक्र चक्रवती के पद को पाकर पर्व और लोक को अपना उपासक बनाने वाले धर्मेन्द्रचक्र रुप तीर्थंकर पद को पाकर OBJ OBJ OBJ अंत में शिवपद को प्राप्त होता है।

The bar via Jeeva who follows the JinendraDev acquires the immeasurable glory of deva life and position of Chakravarty, before whom Kings and rulers of man prostrate themselves and attain to the supremely worshipful status of Godhood finally also reaches Nirvana. OBJ OBJ OBJ

इतिश्री सम्यग्दर्शनम् प्रथममध्ययनम्

अध्याय २ ज्ञानाधिकारो - Chapter 2 Right Knowledge

अन्यूनमनतिरिक्तम्, याथातथ्यम् विना च विपरीतात्।
नि:संदेह वेद यदाहुस्तज्ज्ञानमागमिन:॥४२॥

न्यून, अधिक, विपरीतरहित, वस्तुस्वरुप का ज्ञान।
ज्यू का त्यू संदेहरहित, कहते सम्यग्ज्ञान॥२.१.४२॥

जो वस्तु के स्वरुप को न्यूनतारहित, अधिकतारहित, विपरीततारहित और संदेहरहित जैसा का तैसा जानता है उसको आगम के ज्ञाता सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

Knower of agam called Right knowledge which reveals the nature of things neither less, nor more, nor opposite, doubtless but as it is.

प्रथमानुयोगमर्थाख्यानम् चरितं पुराणमपि पुण्यम्।
बोधिसमाधिनिधानम्, बोधति बोधः समीचीनः॥४३॥

प्रथमानुयोग जानता, धर्म पुराण का ज्ञान।
परम अर्थ का ज्ञान हो, ऐसा सम्यग्ज्ञान॥२.२.४३॥

सम्यग्ज्ञज्ञान परम अर्थ को बताने वाला पुण्य देने वाला, एक पुरुष के आश्रित कथा और त्रैशठ शलाका पुरुषों की पुराण और धर्म व शुक्ल ध्यान रुपी प्रथमानुयोग को जानता हैं ।

As written in prathamanuyog, right knowledge reveals the ultimate meaning of virtues by telling stories of heroes and sixty three shalak purush.

लोकालोकविभक्ते युर्गपरिवृत्तेश्चतुर्गतीनां च।
आदर्शमिव तथा मतिरवैति करणानुयोगं च॥४४॥

युग परिवर्तन व चार गति, ज्ञान लोक अलोक।
जान करणानुयोग को, मतिज्ञान में श्लोक॥२.३.४४॥

तथा मतिज्ञान लोक और अलोक के विभाग, युगों के परिवर्तन और चारों गतियों का स्वरुप दर्पण की तरह दिखने वाले करणानुयोग को भी जानता है।

As written in karananuyog, right knowledge reveals division of space, changing of time and existence of life in four gati.

गृहमेध्यनगाराणां, चारित्रोत्पत्तिवृद्धिरक्षांगम्।
चरणानुयोगसमयं, सम्यग्ज्ञानं विजानाति॥४५॥

उत्पत्ति, वृद्धि या रक्षा, मुनि-गृहस्थ का ज्ञान।
चरणानुयोग जानता, ऐसा सम्यग्ज्ञान॥२.४.४५॥

और यह सम्यग्ज्ञान गृहस्थ और मुनियों के चारित्र की उत्पत्ति, वृद्धि और रक्षा के कारणरुप चरणानुयोग शास्त्र को भी जानता हैं।

As written in charnanuyog, right knowledge reveals the conduct of householder and ascetic about creation, development and maintenance of life.

जीवाजीवसुतत्त्वे, पुण्यापुण्ये च बंधमोक्षौ च।
द्रव्यानुयोगदीपः श्रुतविद्यालोकमातनुते॥४६॥

जीव अजीव व पाप पुण्य, बंध, मोक्ष तत्त्व को जान।
द्रव्यानुयोग भी जानता, ऐसा सम्यग्ज्ञान॥२.५.४६॥

ये सम्यग्ज्ञान जीव, अजीव, पुण्य, पाप, बन्ध, मोक्ष आदि तत्त्व को प्रकाशित करने वाले द्रव्यानुयोग को भी जानता है।

As written in dravyanuyog, right knowedge reveals substances such as living being, non-living being, virtues and sins, bondage and liberation.

अध्याय ३ चारित्र - Chapter 3 Right Conduct

मोहतिमिरापहरणे, दर्शनलाभादवाप्तसंज्ञानः।
रागद्वेषनिवृत्त्यै, चरणं प्रतिपद्यते साधुः॥४७॥

सम्यग्दर्शन लाभ मिला, हुआ मोह का नाश।
राग व द्वेष छूट गये, सम्यक्चारित्र प्रवास॥३.१.४७॥

मोहरूपी अंधकार के दूर होने से सम्यग्दर्शन का लाभ मिला और सम्यग्ज्ञान प्राप्त हुआ जिससे रागद्वेष को छोड़कर सम्यक्चारित्र की प्राप्ति करता हैं।

By destruction of darkness of faith obstructing attachment one attains right knowledge which leads to right conduct by getting rid of likes and dislikes.

रागद्वेषनिवृत्तेर्हिंसादिनिवर्त्तना कृता भवति।
अनपेक्षितार्थवृत्तिः कः पुरुषः सेवते नृपतीन्॥४८॥

रागद्वेष जब छूटते, पाप निवृत्ति होय।
कौन नृप सेवा करे? धन चाह नहीं होय॥३.२.४८॥

रागद्वेष की निवृत्ति से हिंसादि पाप की निवृत्ति होती है क्योंकि धन से अपेक्षारहित कौन राजा की सेवा करता हैं।

By getting rid of likes and dislikes, one destroys five sins such as violence etc.

हिंसानृतचौर्य्येभ्यो, मैथुनसेवापरिग्रहाभ्यां च।
पापप्रणालिकाभ्यो, विरतिः संज्ञस्य चारित्रम् ॥४९॥

हिंसा, झूठ, चोरी करे, कुशील परिग्रह पाप।
विरक्ति जो इन पाप से, सम्यक् चारित्र आप॥३.३.४९॥

सम्यग्ज्ञानी पाप से बचने के लिये हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह से विरक्त रहकर चारित्र का पालन करता हैं।

A person with right knowledge stops violence, untruthfulness, stealing, unchastity and attachment to possessions and indulge in right conduct.

सकलं विकलं चरणं, तत्सकलं सर्वसंगविरतानाम्।
अनगाराणां विकलं, सागाराणां ससंगानाम्॥५०॥

सकल चरण मुनि पालता, गृहस्थ विकल का भाव।
आंशिक परिग्रह विकल में, विकल परिग्रह अभाव॥३.४.५०॥

मुनियों के लिए सकल चारित्र समस्त परिग्रहों से विरक्त व गृहस्थियों के लिए विकल चारित्र अर्थात् आंशिक परिग्रह के साथ होता हैं।

Right conduct is of two kinds. Sakal (absolute) and Vikal (minor). Sakal is for ascetics who have renounced everything and vikal for householder.

गृहिणां त्रेधा तिष्ठत्युण गुण शिक्षाव्रतात्मकं चरणं।
पंचत्रिचतुर्भेदं त्रयं यथासंख्य माख्यातम्॥५१॥

व्रत अणु, गुण और शिक्षा, गृहस्थ चरण संसार।
क्रम से इनके भेद है, पाँच तीन व चार॥३.५.५१॥

गृहस्थों का चारित्र अणुव्रत, गुण व्रत व शिक्षाव्रत क्रमशः पाँच, तीन व चार भेदरुप कहा गया हैं।

The conduct prescribed for householders is five types of anuvrat, three types of gunavrat and four types of shikshavrat.

प्राणातिपात वितथव्याहार स्तेय काम मूर्च्छाभ्य:।
स्थूलेभ्य: पापेभ्यो वयुपरमणमणुव्रतं भवति॥५२॥

हिंसा झूठ चोरी कहा, कुशील परिग्रह पाप।
स्थूल विरक्ति अणुव्रत में, गृहस्थ रखता माप॥३.६.५२॥

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह इन पापों से स्थूलरुप से विरत होना अणुव्रत हैं।

Anuvrat is minor vows form avoidance of violence, lies, stealing, unchastity and possessions.

संकल्पात्कृतकारित, मननाद्योगत्रयस्य चरसत्त्वान्।
न हिनस्ति यत्तदाहुः स्थूलवधाद्विरमणं निपुणाः॥५३॥

संकल्पित हिंसा करता नहीं, मन, वचन और काय।
न कारित न अनुमोदना, अहिंसाव्रत कहलाय॥३.७.५३॥

जो मन वचन व काय से संकल्पित हिंसा न करता है, न कराता है और न ही अनुमोदना करता हैं उसे गणधर देव स्थूल हिंसा से विरक्त अणुव्रत कहते हैं।

Ahimsa anuvrat is avoiding intentional violence by mind, words and actions and neither they do, nor get it done nor approves.

छेदनबन्धनपीडन, मतिभारारोपणं व्यतीचाराः।
आहारवारणापि च स्थूलवधाद्व्युपरतेः पंच॥५४॥

छेदन, बध, पीड़ा नहीं, लादे ना अतिभार।
अंतराय आहार नहीं, पाँच हिंसा अतिचार॥३.८.५४॥

छेदना, बाँधना, पीड़ा देना, अधिक भार लादना व आहार का रोकना स्थूल हिंसा से विरत श्रावक के पाँच अतिचार हैं।

Five violations of non-violence vow are as follow: piercing, binding, causing pain, overloading and causing starvation.

स्थूलमलीकं न वदति न परान् वादयति सत्यमपि विपदे ।
यत्तद्वदन्ति सन्तः, स्थूलमृषावादवैरमणम्॥५५॥

स्थूल झूठ बोले नहीं, मन वचन और काय।
न बोले न अनुमोदना, सत्याणुव्रत कहलाय॥३.९.५५॥

जो स्थूल झूठ न स्वयं बोलता है न बुलवाता है, जो दूसरों की विपत्ति के लिए न असत्य बोलता हैं न बुलवाता हैं ऐसी क्रिया के त्याग को संत सत्याणुव्रत कहते हैं।

Vow of truthfulness is refraining from lies, not causing others to tell lies, avoiding truth which causes afflictions to others.

परिवादरहोभ्याख्यापैशुन्यं कूटलेखकरणं च।
न्यासापहारितापि च व्यतिक्रमाः पंच सत्यस्य ॥५६॥

न दोष न रहस्य खोलना, झूठ लेख परिहार।
धरोहर हड़पता नहीं, सत्याणुव्रत अतिचार॥३.१०.५६॥

सत्याणुव्रत के पाँच अतिचार हैं दोषारोपण, रहस्य खोलना, चुगलखोरी, झूठ लेखन व धरोहर को हड़पना।

Five violations of satyanuvrat are as follow: false accusation, revealing secrets, backbiting, false writings and lying when one ask for his things.

निहितं वा पतितं वा, सुविस्मृतं वा परस्वमविसृष्टं।
न हरति यन्न च दत्ते, तदकृशचौर्य्यादुपारमणम्॥५७॥

रखी, गिरी, भूली हुई, बिना दी नहीं लाय।
न ले न दे पर की वस्तु, अचौर्याणुव्रत पाय॥३.११.५७॥

जो रखी हुई, गिरी हुई, भूली हुई और बिना दी गई अन्य की वस्तु को न लेता है और दूसरे के लिए न देता है उसे अचौर्याणुव्रत कहते हैं।

The vow of non-stealing is not taking others belongings without permission.

चौरप्रयोगचौरार्थादानविलोपसदृशसन्मिश्रा:।
हीनाधिकविनिमानं पँचास्तेये व्यतीपाता:॥५८॥

चोरी ग्रहण, भंग नियम, करें चोरी विचार।
मिलावट व नाप गड़बड़, अचौर्य व्रत अतिचार॥३.१२.५८॥

अचौर्याणुव्रत के पाँच अतिचार- अन्य को चोरी के उपाय बताना, चोरी का माल ग्रहण करना, राजकीय नियमों का उल्लंघन करना, मिलावट करना व नापने में गड़बड़ करना।

Five violations of achauryanuvrat (vow of non-stealing) are as follow: giving instruction for stealing, receiving stolen things, evading laws, adulteration and using wrong weights and measures.

न तु परदारान् गच्छति न परान् गमयति च पापभीतेर्यत्।
सा परदारनिवृत्तिः स्वदारसन्तोषनामापि॥५९॥

पर स्त्री में गमन नहीं, मन वचन और काय।
भय पाप संतोष सदा, ब्रह्मचर्यव्रत भाय॥३.१३.५९॥

जो पाप के भय से परस्त्रियों के प्रति न तो स्वयं गमन करता है न कराता है वह क्रिया परस्त्री त्यागरुप स्वदारसंतोष नामक ब्रह्मचर्य अणुव्रत हैं।

Vow of chastity is neither visiting others women nor encouraging anyone to visit others women.

अन्यविवाहाकरणानंगक्रीडा विटत्व विपुलतृषः।
इत्वरिकागमनं चास्मरस्य पंच व्यतीचाराः॥६०॥

अन्य विवाह, क्रीड़ा अनंग, कामुक कर्म विचार।
तीव्र चाह, व्यभिचरण, ब्रह्मचर्यव्रत अतिचार॥३.१४.६०॥

ब्रह्मचर्य अणुव्रत के पाँच अतिचार- अन्य का विवाह कराना, अनंग क्रीड़ा, कामुक चेष्टा व वचन, कामसेवन की तीव्र अभिलाषा करना व व्यभिचारिणी स्त्रियों के यहाँ आना जाना।

Five violations of brahmacharyaanuvrat (vow of chastity): match making for others children, unnatural sex, using erotic actions and words, excessive passion in sex and visiting prostitutes.

धनधान्यादिग्रन्थं, परिमाय ततोऽधिकेषु निःस्पृहता।
परिमितपरिग्रहः स्यादिच्छापरिमाणनामापि॥६१॥

धनधान्य सीमित रखे, चाह अधिक नहीं जाण।
हर वस्तु सीमा बांधता, व्रत परिग्रहपरिमाण॥३.१५.६१॥

धन धान्यादि को सीमित कर उनसे अधिक परिग्रह से इच्छारहित होना परिग्रहपरिमाण अणुव्रत है।

Possession limiting vow (parigrahaparimanvrat) is limiting possessions such as money, things etc and not keeping attachment with possessions.

अतिवाहनातिसंग्रह विस्मयलोभातिभारवहनानि।
परिमितपरिग्रहस्य च विक्षेपा: पंच लक्ष्यन्ते॥६२॥

अतिवाहन व अतिसंग्रह, अतिविस्मय, अतिभार।
अतिलोभ जब जीव करे, अपरिग्रह अतिचार॥३.१६.६२॥

परिग्रहपरिमाण अणुव्रत के पाँच अतिचार- अतिवाहन, अतिसंग्रह, अतिविस्मय, अतिलोभ और अतिभारवहन।

Five violations of possession limiting vow are as follow: excess vehicles, unnecessary possessions, expressing wonder at the pomp and prosperity of others, excessive greed and overloading animals.

पंचाणुव्रतनिधयो निरतिक्रमणा: फलन्ति सुरलोकं।
यत्रावधिरष्टगुणा दिव्यशरीरं च लभ्यन्ते॥६३॥

अणुव्रत जब अतिचाररहित, स्वर्गलोक फल पाय।
अवधिसहित आठ ऋद्धियाँ, दिव्यशरीर भी
भाय॥३.१७.६३॥

अतिचाररहित पाँच अणुरुपी निधियाँ स्वर्गलोक का फल देती हैं जहाँ अवधिज्ञान अणिमा आदि आठ ऋद्धियाँ और सप्त धातुरहित सुन्दर वैक्रियिक शरीर प्राप्त होते हैं।

By observing minor vows one get fruit of heaven with clairvoyance knowledge, eight kind of miraculous powers and divine body.

मातंगो धनदेवश्च वारिषेणस्ततः परः।
नीली जयश्च सम्प्राप्ताः पूजातिशयमुत्तमम्॥६४॥

यमपाल व धनदेव है, क्रम से व्रत का मान।
वारिषेण व वणिकपुत्री, जयकुमार को जान॥३.१८.६४॥

अणुव्रतधारियों में यमपाल नामक चाण्डाल, धनदेव, वारिषेण, वणिकपुत्री नीली और जयकुमार क्रम से अहिंसादि अणुव्रतों में उत्तम पूजा के अतिशय को प्राप्त हुए।

Following people became famous in five minor vows respectively. Low caste Yampal, Dhandev, Varishen, Vanikputri Neeli and Jaykumar.

धनश्रीसत्यघोषौ च तापसारक्षकावपि।
उपाख्येयास्तथा श्मश्रुनवनीतो यथाक्रमम्॥६५॥

धनश्री व सत्यघोष ने, पाँच पाप बखान।
तापस व कोतवाल है, श्मश्रुनवनीत अज्ञान॥३.१९.६५॥

धनश्री, सत्यघोष, तापस, कोतवाल और श्मश्रुनवनीत क्रम से हिंसादि पाँच पापों में उपाख्यान करने के योग हैं।

Following people became notoriously famous in five sins respectively. Dhanashree, Satyaghosh, Tapas, Kotwal and Shmshrunavnit.

मद्यमांसमधुत्यागैः सहाणुव्रतपंचकम्।
अष्टौ मूलगुणानाहुर्गृहिणां श्रमणोत्तमाः॥६६॥

मद्य, मांस, मधु त्याग के, पाँचव्रत का ज्ञान।
अष्टमूलगुण श्रावक के, जिन आगम पहचान॥३.२०.६६॥

मद्य, मांस व मधु के त्याग के साथ पाँच व्रत का पालन करना श्रावक के आठ मूलगुण कहलाते हैं।

As per holy saints obsevance of five vows and refraining from meat, wine and honey are eight fundamental virtues.

अध्याय ४ गुणव्रत - Chapter 4 Gun Vrat

दिग्व्रतमनर्थदण्ड व्रतं च भोगोपभोगपरिमाणम्।
अनुबृंहणाद्गुणाना माख्यान्ति गुणव्रतान्यार्या:॥६७॥

दिग्व्रत व अनर्थदण्डव्रत, भोगोपभोग नाप।
मूल गुण में वृद्धि करे, गुरुदेव आलाप॥४.१.६७॥

दिग्व्रत, अनर्थदण्डव्रत व भोगोपभोगपरिमाणव्रत आचार्यदेव के अनुसार मूलगुणों में वृद्धि करते हैं।

As per holy saints digvrat, anarthdantyagvrat and bhogopabhogparimanvrat increases the merits of five vows hence it is called gunvrat.

दिग्वलयं परिगणितं कृत्वातोऽहं बहिर्न याय्यामि।
इति संकल्पो दिग्व्रत मामृत्यणुपापविनिवृत्त्यै॥६८॥

दसों दिशा सीमा करे, जीवनभर का नाप।
दिग्व्रत का संकल्प यही, छूटे सूक्ष्म पाप॥४.२.६८॥

जीवनपर्यन्त सूक्ष्म पापों की निवृत्ति के लिए दिशाओं की मर्यादा करके उसके बाहर न जाने का संकल्प करना दिग्व्रत हैं।

Taking vow for life time to live within limits as decided is called digvrat.

मकराकरसरिदटवी गिरी जनपदयोजनानि मर्यादा:।
प्राहुर्दिशां दशानां प्रतिसंहारे प्रसिद्धानि॥६९॥

प्रसिद्ध समुन्द्र या नदी, पहाड़ जंगल मान।
सीमा योजन या शहर, दस दिशा को जान॥४.३.६९॥

प्रसिद्ध समुन्द्र, नदी, पहाड़ी, जंगल, पर्वत, शहर और योजन को दशों दिशाओं में अपने गमन की सीमा बनाना।

Limits in digvrat are set according to famous oceans, rivers, mountains, cities, distance etc.

अवधेर्बहिरणुपाप प्रतिविरतेर्दिग्व्रतानि धारयताम्।
पंचमहाव्रतपरिणतिमणुव्रतानि प्रपद्यन्ते॥७०॥

सूक्ष्म पाप की निवृत्ति, सीमा बाहर जान।
है दिग्व्रत की धारणा, हो महाव्रत समान॥४.४.७०॥

दिग्व्रत को धारण करने वाले के अणुव्रत की मर्यादा के बाहर सूक्ष्म पापों की निवृत्ति हो जाने से पाँच महाव्रतों की समानता को प्राप्त होते हैं।

By the avoidance of subtle sins beyond the determined limits, the minor vows of householder are able to rank as the unqualified vows of asceticism

प्रत्याख्यानतनुत्वान् मन्दतराश्चरणमोहपरिणामा:।
सत्त्वेन दुरवधारा, महाव्रताय प्रकल्प्यन्ते॥७१॥

प्रत्याख्यानावरण रहे, क्रोध आदि कषाय।
चारित्र मोह मंद अवस्था, महाव्रत को पाय॥४.५.७१॥

प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया लोभ का मन्द उदय होने से अत्यन्त मंद अवस्था को प्राप्त जिनका अस्तित्वरुप से निर्धारण करना भी कठिन है ऐसे चारित्रमोह के परिणाम महाव्रत के व्यवहार के लिए कल्पना किए जाते हैं।

In Pratyakhanvarna stage anger, ego, deceit and greed are so low that it gives an indication of asceticism as if one is following mahavrat.

पंचानां पापानां हिंसादीनां मनोवच:कायै:।
कृतकारितानुमोदैस्त्यागस्तु महाव्रतं महताम्॥७२॥

हिंसा आदि पंच पाप को, मन वचन और काय।
कृत, कारित, अनुमोदना, प्रमत्तविरत कहलाय॥४.६.७२॥

हिंसादिक पाँचो पापो का मन, वचन और काय से तथा कृत, कारित और अनुमोदना से त्याग करना प्रमत्तविरत आदि गुणस्थानर्ती महापुरुषों का महाव्रत होता हैं।

Abstaining from five sins like himsa etc. in all the three ways of krit, karit and anumodana with mind, speech and conduct is called mahavrat of great ascetics.

ऊर्ध्वाधस्तात्तिर्यग्वयतिपाता: क्षेत्रवृद्धि रवधीनां।
विस्मरणं दिगविरते रत्याशा: पंच मन्यन्ते॥७३॥

ऊपर नीचे या दिशा, दिग्व्रत पंच अतिचार।
क्षेत्र बढ़ा व भूल करे, सीमा कर ना पार॥४.७.७३॥

दिग्व्रत के पाँच अतिचार हैं - ऊपर, नीचे तथा दिशाओं की मर्यादा का उल्लंघन करना, क्षेत्र की मर्यादा बढा लेना और मर्यादाओं को भूल जाना।

Five violations of digvrat are as follow: exceeding the limits in up, down or side directions, extending the limits set or forgetting the limits determined.

अभ्यंतरं दिगवधे रपार्थकेभ्य: सपापयोगेभ्य:।
विरमणमनर्थदण्ड व्रतं विदुर्व्रतधराग्रण्य:॥७४॥

सब दिशाएँ बांध मुनि, बाहर कदम न जाय।
अनर्थदण्डत्यागव्रत है, मन वचन और काय॥४.८.७४॥

व्रतधारण करने वाले मुनि दिशाओं के भीतर प्रयोजनरहित पापबंध के कारण मन वचन काय की प्रवृत्तियों से विरक्त होने को अनर्थदण्डत्यागव्रत कहते हैं।

The best of ascetics call refraining from purposeless activity by mind, words and conduct as anarthdandtyagvrat.

पापोपदेश हिंसादानापध्यान दुःश्रुतीः पंच।
प्राहुः प्रमादचर्यामनर्थदण्डानदण्डधराः॥७५॥

पंच अतिचार अनर्थदण्ड, पापवचन हिंसादान।
प्रमादचर्या व दुःश्रुति, या फिर हो अपध्यान॥४.९.७५॥

अनर्थदण्ड के पाँच प्रकार बताये- पापोपदेश, हिंसादान, अपध्यान, प्रमादचर्या, तथा दुःश्रुति।

There are five kinds of anarthdand (penalising for purposeless activity) - papopadesh (words leads to sins), himsadaan (giving things which leads to violence), apdhyan (purposeless thinking), pramadcharya (careless actions), and duhshruti (purposeless listening).

तिर्यक्क्लेशवाणिज्या, हिंसारम्भप्रलभ्भनादीनाम्।
कथाप्रसंगः प्रसवः स्मर्त्तवयः पापउपदेशः॥७६॥

पशुक्लेश, व्यापार हिंसा, आरम्भ या छल घात।
चाह उत्पत्ति, कथा कहे, पाप अनर्थदण्ड बात॥४.१०.७६॥

पशुओं को क्लेश, व्यापार हिंसा, आरम्भ और छलने आदि की हिंसा, कथाओं का प्रसंग, उत्पन्न करना आदि का उपदेश देना पापोपदेश नामक अनर्थदण्ड हैं।

Advising about cruelty to animals, trade violence, deceiving, narrating such stories, advising about creations etc are papopdesh anarthdand.

परशुकृपाणखनित्रज्वलनायुधश्रंगिश्रंखलादीनाम्।
वधहेतूनां दानं हिंसादानं ब्रुवन्ति बुधाः॥७७॥

फरसा, कृपाण, फावड़ा, अग्नि छुरी व कटार।
हिंसादान अनर्थदण्ड है, विष सांकल हथियार॥४.११.७७॥

फरसा, तलवार, कुदाली, फावड़ा, अग्नि, छुरी कटार आदि हथियार, सींगी या विष और सांकल आदि हिंसा की वस्तुएँ दान करना ज्ञानी संत के अनुसार हिंसा दान अनर्थदण्ड है।

Giving as donation axe, sword, pickaxe, grub ax, fire, knife, dagger, poision, chain etc. is himsadaan anarthdand as per wise saints.

वधबंधच्छेदादेर्द्वेषाद्रागाच्च परकलत्रादेः।
आध्यानमपध्यानं शासति जिनशासने विशदाः॥७८॥

मारे बांधे द्वेष से, छेदन करता जान।
राग प्रवक्ता करे, अनर्थदण्ड अपध्यान॥४.१२.७८॥

द्वेष से मारने, बाँधने, छेदने, पर स्त्री से राग आदि का चिन्तन करना जिनशासन के अनुसार अपध्यान नामक अनर्थदण्ड हैं।

Thinking about killing, binding, piercing, attachment with other women etc are apdhyaan anarthdand as per Jinvaani.

आरम्भसंगसाहस, मिथ्यात्व द्वेष राग मद मदनै:।
चेत: कलुषयतां श्रुति रवधीनां दु:श्रुतिर्भवति॥७९॥

आरम्भ, साहस व परिग्रह, मिथ्यात्व, द्वेष व राग।
अहं, विषय, चित्त मलिन कथा, दु:श्रुति अनर्थदण्ड जाग॥४.१३.७९॥

आरम्भ, परिग्रह, साहस, मिथ्यात्व, द्वेष, राग, घमण्ड, विषयभोग, चित्त को मलिन करने वाली कथाएँ सुनना दु:श्रुति नामक अनर्थदण्ड है।

Listening about beginning of ventures, possessions, daring crimes, false doctrines, hatred, love, pride, passions which disturbs the mind is duhshruti anarthdand.

क्षितिसलिलदहनपवनारम्भं विफलं वनस्पतिछेदं।
सरणं सारणमपि च, प्रमादचर्यां प्रभाषन्ते॥८०॥

भू, जल, अग्नि व वायु का, अपव्यय बिना बात।
प्रमादचर्या का अनर्थदण्ड, वनस्पति का घात॥४.१४.८०॥

बिना प्रयोजन के पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु का आरम्भ या अपव्यय करना, वनस्पति का छेदन, घूमना इन सबको प्रमादचर्या का अनर्थदण्ड कहा हैं।

Without purpose digging earth, water, putting fire or handling air or wasting natural resources, destroying plants, purposeless movements are called pramadcharya anarthdand.

कन्दर्पं कौत्कुच्यं मौखर्य मतिप्रसाधनं पंच।
असमीक्ष्य चाधिकरणं व्यतीतयोऽनर्थदण्डकृद्विरते:॥८१॥

अनिष्ट वचन, कुचेष्टा, कृत्य बिना विचार।
बकबक, संग्रह अनावश्यक, अनर्थदण्ड पंच
अतिचार॥४.१५.८१॥

अशिष्ट वचन कहना, कुचेष्टा करना, बकवास करना, भोगोपभोग सामग्री का अनावश्यक संग्रह करना, बिना विचार किये कार्य करना ये अनर्थदण्ड के पाँच अतिचार हैं।

Five violations of anarthdand are as follow: disrespectful speech, ridiculous attitude, rubbish talks, unnecessary possession of things and actions without proper thoughts.

अक्षार्थानां परिसंख्यानं भोगोपभोगपरिमाणम्।
अर्थवतामप्यवधौ रागरतीनांतनूकृतये॥८२॥

इन्द्रिय विषय सीमा करे, भोगोपभोग परिमाण।।
परिग्रह सीमा से कड़ी, राग नियंत्रण जाण ॥४.१६.८२॥

राग से होने वाली विषयों की लालसा को घटाने के लिए परिग्रह परिमाणव्रत में की हुई परिग्रह की मर्यादा में भी प्रयोजनभूत इन्द्रियों के विषयों का परिमाण करना भोगोपभोग परिमाण व्रत हैं।

Putting limitations within the limits allowed by parigrahparimanvrat with a view to reducing sense of attachment with the objects is called bhogopabhogparimanvrat.

भुक्त्वापरिहातव्यो भोगो भुक्त्वा पुनश्च भोक्तव्यः।
उपभोगोऽशनवसन प्रभृतिः पांचेन्द्रियो विषयः॥८३॥

पाँच इन्द्रिय विषय हैं, भोग और उपभोग।
एक बार को भोग कहा, बारंबार उपभोग॥४.१७.८३॥

पाँचों इन्द्रियों सम्बंधी विषय जैसे भोजन आदि भोग करके छोड़ देने योग्य है वो भोग है और वस्त्र आदि बारबार भोगने योग्य है वह उपभोग हैं।

Items which are consumed once such as food is called bhog and those things which are reused such as clothes are called upabhog.

त्रसहतिपरिहरणार्थं क्षौद्रं पिशितं प्रमादपरह्रतये।
मद्यं च वर्जनीयं जिनचरणौ शरणमुपयातै:॥८४॥

जिन चरण में श्रावक जन, दूर रहे प्रमाद।
मधु, मांस और मदिरा, चखते नहीं स्वाद॥४.१८.८४॥

जिनेन्द्रदेव की चरणों में प्राप्त हुए श्रावकों द्वारा त्रस जीवों की हिंसा का प्रमाद दूर करने के लिए मधु, मांस और मदिरा त्यागने योग्य हैं।

Those who seek refuge in jinendradev, shall give up honey, non-veg food and wine to escape from pramad or non-vigilance.

अल्पफलबहुविघातान् मूलक माद्राणि श्रंगवेराणि।
नवनीत निम्बकुसुमं कैतकमित्येव मवहेयम्॥८५॥

सचित्त या जमीकंद रहे, मक्खन को भी त्याग।
नीम के फूल, केवड़ा, हिंसा की है आग॥४.१९.८५॥

इस व्रत में थोड़ा फल और अधिक हिंसा होने से हरी वस्तु (सचित्त), अदरक, मूली गाजर इत्यादि, मक्खन, नीम के फूल, केवड़ा के फूल इत्यादि वस्तुएँ छोड़ने योग्य हैं।

There will be little good but great violence in consuming green food, green ginger, roots, butter, buds and flowers so shall be given up.

यदनिष्टं तद् व्रतयेद्यच्चानु पसेव्यमेतदपि जह्यात्।
अभिसन्धिकृता विरतिर्विषयाद्योग्याद्व्रतं भवति॥८६॥

अहितकर व अयोग्य वस्तु, सेवन का हो ज्ञान।
त्यागना ही श्रेष्ठ है, निवृत्ति व्रत पहचान॥४.२०.८६॥

इस व्रत में जो वस्तु अहितकर और अयोग्य है उसे छोड़े क्योंकि योग्य विषय से अभिप्रायपूर्वक की हुई निवृत्ति व्रत होती हैं।

Any thing which is useless and not usable given up with purpose is called vow.

नियमो यमश्च विहितौ द्वैधा भोगोपभोगसंहारात्।
नियमः परिमितकालो यावज्जीवं यमो ध्रियते॥८७॥

यम होते जीवनपर्यन्त, नियम का निश्चित काल।
भोगोपभोग कम रहे, जैन धर्म की चाल॥४.२१.८७॥

यम और नियम दो तरह से भोग व उपभोग का त्याग धारण किया जाता हैं। नियत काल के लिए नियम व जीवनपर्यन्त के लिए यम।

Renunciation of bhog and upabhog is of two kinds. Yam and Niyam. Yam are for life time and Niyam are for definite time.

भोजन वाहन शयन स्नान पवित्रांगराग कुसुमेषु।
ताम्बूल वसन भूषण मन्मथ संगीतगीतेषु॥८८॥

अद्य दिवा रजनी वा पक्षो मासस्तथर्तुरयनं वा।
इति कालपरिच्छित्या प्रत्याख्यानं भवेन्नियमः॥८९॥

भोजन, वाहन या शयन, श्रंगार, स्नान, पान।
वस्त्र, अलंकार, काम या, गीत संगीत जान॥४.२२.८८॥

एक घड़ी, पहर, दिन रहे, रात्रि, पक्ष, या माह।
काल नियम त्याग करे, परिमाणव्रत राह॥४.२३.८९॥

भोजन, वाहन, शयन, स्नान, श्रंगार, पान, वस्त्र, अलंकार, कामभोग, संगीत और गीत के विषय में एक घड़ी, एक पहर, एक दिन, एक रात्रि, एक पक्ष, एक माह, दो माह अथवा छह माह इस प्रकार काल के नियम से त्याग करना भोगोपभोगपरिमाणव्रत में नियम होता हैं।

Abstaining for an hour, a day, a night, a fortnight, a month, a quarter or a half year anything such as food, vehicle, couch, bathing, makeup, clothes, jewellery, sex, music is called niyam as per bhogopabhogparimanvrat.

विषयविषतोऽनुपेक्षानुस्मृतिरतिलौल्यमतितृषानुभवौ।
भोगोपभोगपरिमा व्यतिक्रमाः पंच कथ्यन्ते॥९०॥

विषय विष आसक्ति हो, भूत भविष्य वर्तमान।
पंच अतिचार इस व्रत के, भोगोपभोग
परिमाण॥४.२४.९०॥

भोगोपभोग परिमाण व्रत के पाँच अतिचार ये कहे:
विषयरुपी विष में आनन्द आना, भोगे हुए विषयों का बारबार स्मरण करना, वर्तमान विषयों में लम्पटता रखना, आगामी भोगोपभोग विषयों की तृष्णा रखना तथा वर्तमान विषय का अत्यन्त आसक्तिपूर्वक अनुभव करना।

There are five violations of bhogopabhogparimanvrat: craving for sensual enjoyments, remebering pleasurable experiences, indulging in sensual pleasures, planning for sensual pleasure and too much attachment with present sensual pleasures.

अध्याय ५ शिक्षाव्रत - Chapter 5 Shiksha Vrat

देशावकाशिकं वा, सामयिकं प्रोषधोपवासो वा।
वैयावृत्त्यं शिक्षाव्रतानि चत्वारि शिष्टानि॥९१॥

देशव्रत सामायिक है, शिक्षाव्रत है चार।
प्रोषध, वैयावृत्य भी, शिक्षाव्रत विचार॥५.१.९१॥

चार शिक्षाव्रत कहे गये हैं। देशावकाशिक, सामायिक, प्रोषधोपवास और वैयावृत्य।

There are four Shikshavrat: Deshavkashik, Samayik, Proshadhopvas and Vaiyavrutya.

देशावकाशिकं स्यात् कालपरिच्छेदनेन देशस्य।
प्रत्यहमणुव्रतानां प्रतिसंहारो विशालस्य॥९२॥

दिग्व्रत में श्रावक करता, निश्चित सीमा काल।
देशव्रत सीमा कड़ी, दिग्व्रत काल विशाल॥५.२.९२॥

अणुव्रतपालक श्रावकों का दिग्व्रत में की गई मर्यादा का समय के विभाग से संकुचित करना देशावकाशिक या देशव्रत कहलाता हैं।

Minor vow holders further restrict themselves for a certain time period is called deshavkashikvrat.

गृहहारिग्रामाणां क्षेत्रनदीदावयोजनानां च।
देशावकाशिकस्य स्मरन्ति सीम्नां तपोवृद्धा:॥९३॥

प्रसिद्ध घर, ग्राम, गली, क्षेत्र, नदी, की पाल।
सीमा जंगल योजन की, देशव्रत की चाल॥५.३.९३॥

प्रसिद्ध घर, गली, ग्राम, क्षेत्र, नदी, जंगल व योजन की मर्यादा के नियम को तपस्वी साधुओं ने देशावकाशिक व्रत कहा हैं।

Restricting self to specific house, lane, village, area, river, forest or distance is called deshavkashikvrat by wise saints.

संवत्सरमृतुरयनं मासचतुर्मासपक्षमृक्षं च।
देशावकाशिकस्य प्राहुः कालावधिं प्राज्ञाः॥९४॥

एक वर्ष, माह, ऋतु व पक्ष, दिन नक्षत्र काल।
देशव्रत ज्ञानी कहे, काल मर्यादा पाल॥५.४.९४॥

ज्ञानी संत देशावकाशिक व्रत की काल मर्यादा को एक वर्ष, छह माह, एक ऋतु, एक माह, चार माह, पन्द्रह दिन और एक दिन या एक नक्षत्र तक कहते है।

Time period for deshavkashikvrat may an year, six months, a season, one month, four months, fortnight or a day or star cycles.

सीमानतानां परतः स्थूलेतरपंचपापसन्त्यागात्।
देशावकाशिकेन च महाव्रतानि प्रसाध्यन्ते॥९५॥

सीमा के बाहर देशव्रत में, पाँच पाप का त्याग।
सिद्ध होते महाव्रत से, देशव्रत का मार्ग॥५.५.९५॥

सीमाओं के बाहर स्थूल और सूक्ष्म पाँच पापों का पूर्ण त्याग हो जाने से देशावकाशिक द्वारा महाव्रत सिद्ध किये जाते हैं।

The observer of Deshavakashikvrat are also termed as observer of mahavrat within limits set because they renunciate five kinds of gross as well subtle sins.

प्रेषणशब्दानयनं रूपाभिव्यक्तिपुद्गलक्षेपौ।
देशावकाशिकस्य व्यपदिश्यन्तेऽत्यया: पंच॥९६॥

सीमा बाहर भेजना, बोले, माँग दिखाय।
देशव्रत अतिचार है, पत्थर फेंक बुलाय॥५.६.९६॥

देशावकाशिकव्रत के पाँच अतिचार: नियमित मर्यादा के बाहर भेजना, बोलना, मँगाना, शरीर दिखाना व पत्थर आदि फेंकना।

Five violations of deshavkashikvrat: breaching the limits by sending someone, speaking, calling, showing gestures and throwing stones etc.

आसमयमुक्ति मुक्तं पंचाघाना मशेषभावेन।
सर्वत्र च सामयिका: सामयिकं नाम शंसन्ति॥९७॥

भाव पूर्ण त्याग करे, पंच पाप नियत काल।
गणधर देव इसे कहे, सामायिक हर हाल॥५.७.९७॥

निश्चित समय तक पूर्ण भाव (मन, वचन व काया) से पाँचो पापो के सर्वत्र त्याग को गणधर देवों ने सामायिक कहा हैं।

Gandhardev has defined samayik as complete renunciation of all five sins by mind, speech and body for a certain time.

मूर्धरुहमुष्टिवासो बन्धं पर्य्यंकबंधनं चापि।
स्थानमुपवेशनं वा समयं जानन्ति समयज्ञा:॥९८॥

केश, मुष्टि, वस्त्र बंधन, पद्मासन कुछ काल।
कायोत्सर्ग में खड़े रहे, सामायिक वो पाल॥५.८.९८॥

आगम के ज्ञाता केशबंधन, मुष्टिबंधन, वस्त्रबंधन, पद्मासन, कायोत्सर्ग में खड़े रहना या बैठने को भी सामायिक कहते हैं।

Knowers of agam called Samayik as tying hairs, fist, garment, padmasan and kayotsarga for a certain time.

एकान्ते सामयिकं निर्व्याक्षेपे वनेषु वास्तुषु च।
चैत्यालयेषु वापि च परिचेतव्यं प्रसन्नधिया॥९९॥

एकान्त, वन, घर, या मंदिर, गुफा जैसा स्थान।
प्रसन्नचित्त सामायिक हो, बढ़ता जाये ज्ञान॥५.९.९९॥

एकान्त में प्रसन्नचित्त भाव से उपद्रवरहित होकर वन में, एकान्त घर में, मंदिर में, गुफा या वृक्ष की कोटर में सामायिक बढाना चाहिये।

In seclusion and with cheerful mood one shall increase the period of samayik while in lonely house or temple or cave or under the tree.

व्यापार वैमनस्याद्विनिवृत्त्यामन्तरात्म विनिवृत्त्या।
सामयिकं बध्नीयादुपवासे चैकभुक्ते वा॥१००॥

निवृत हो काम झंझट से, मन विकल्प को छोड़।
उपवास व एकासन में, सामायिक मन मोड़॥५.१०.१००॥

व्यापार की कलुषता से निवृत्त होकर, मन के विकल्पो से निवृत्त होकर उपवास व एकासन के दिन सामायिक को बढाना चाहिए।

By withdrawing mind from all sorts of worldly activities, removing all sorts of alternatives, by doing fasting or one time food one shall increase the Samayik.

सामयिकं प्रतिदिवसं यथावदप्यनलसेन चेतव्यं।
व्रतपंचकपरिपूरण कारणमवधानयुक्तेन॥१०१॥

आलस व व्यवधान रहित, सामायिक में ध्यान।
पाँचों व्रत पालन हो, जैन धर्म का ज्ञान॥५.११.१०१॥

आलस्य व व्यवधान रहित प्रतिदिन विधिपूर्वक सामायिक करने से पाँचों व्रतों का पालन होता हैं।

By doing daily samayik, without laziness and disturbance, it helps in observing five vows.

सामयिके सारम्भाः परिग्रहा नैव सन्ति सर्वेऽपि।
चेलोपसृष्टमुनिरिव गृही तदा याति यतिभावम्॥१०२॥

आरम्भ परिग्रह हो नहीं, सामायिक के भाव।।
गृहस्थ पर वस्त्र भार लगे, मुनि समान
स्वभाव॥५.१२.१०२॥

सामायिक में आरम्भ व परिग्रह का अभाव होने से गृहस्थ ऐसा प्रतित होता है जैसे मुनि पर वस्त्र का उपसर्ग किया हो।

Due to absence of any beginning or possessions in samayik, householder appear as ascetic who is afflicted by cloth.

शीतोष्णदंशमशकपरीषहमुपसर्गमपि च मऔनधरा:।
सामयिकं प्रतिपन्ना अधिकुर्वीरन्नचलयोगा:॥१०३॥

सर्दी गर्मी काटे मच्छर, मौन अटल व्यवहार।
परीषह या उपसर्ग हो, करता नहीं विचार॥५.१३.१०३॥

सामायिक में मौन व निश्चलता के साथ शीत, उष्ण, मच्छर का काटना, डंसना व अन्य परीषह व उपसर्ग को सहन करता हैं।

In samayik one ignores parishah (troubles of nature) such as cold and heat and upsarg (troubles caused by others) such as mosquito bites etc.

अशरणमशुभमनित्यं दु:खमनात्मानमावसामि भवम्।
मोक्षस्तद्विपरीतात्मेति ध्यायन्तु सामयिके॥१०४॥

अशरण, अशुभ अनित्य है, दुख भरा संसार।
मोक्ष को विपरीत कहा, सामायिक में सार५.१४.१०४॥

सामयिक में यह ध्यान करे कि मेरा आवास इस संसार में अशरण, अशुभ, अनित्य, दुख से भरा व आत्मस्वरूप रहित है व मोक्ष इसके विपरीत स्वभाव वाला अर्थात शरण, शुभ, नित्य, सुखकारी व आत्मस्वरूप हैं।

In samayik one shall meditate that in this world there is no protection to soul, world is inauspicious, impermanent and full of sufferings where as moksha is opposite of samsara.

वाक्कायमानसानां दु:प्रणिधानान्यनादरास्मरणे।
सामयिकस्यातिगमा व्यज्यन्ते पंच भावेन॥१०५॥

खोट मन वचन काय में, सामायिक अतिचार।
अनादर व अस्मरण हो, अच्छे नहीं विचार॥५.१५.१०५॥

सामायिक के पाँच अतिचार- मन, वचन व काय की खोटी प्रवृत्तियाँ, अनादर व अस्मरण।

Five violations of samayik- activities of mind, speech and body, disrespect to meditation and forgetting that I am in meditation.

पर्वण्यष्टम्यां च ज्ञातव्य: प्रोषधोववासस्तु।
चतुरभ्यवहार्य्याणां प्रत्याख्यानं सदेच्छाभि:॥१०६॥

अष्टमी और चतुर्दशी, प्रोषध व उपवास।
चार आहर त्याग हो, शिक्षा व्रत है ख़ास॥५.१६.१०६॥

अष्टमी व चतुर्दशी के दिन सद्भावना से सदा के लिए चारो प्रकार के आहार (खाद्य, स्वाद्य, लेह्य व पेय) का त्याग करना प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत जानना चाहिये।

Abstaining from four kinds of food on 8th and 14th tithi of hindi calendar every fortnight is called Proshdhopvas shiksha vrat.

पंचानां पापानामलंक्रियारम्भगन्धपुष्पाणाम्।
स्नानांजननस्यानामुपवासे परिह्रतिं कुर्य्यात्॥१०७॥

पाप, आरंभ श्रंगार का, कर देता है त्याग।
उपवास दिन श्रावक जन, रखते नहीं है राग॥५.१७.१०७॥

उपवास के दिन पाँचों पापों का त्याग और अलंकार, आरंभ, खूशबू, पुष्प, स्नान, अंजन, सूंघना आदि का परित्याग करना चाहिये।

On the day of fasting one shall give up all five sins, jewellery, beginning of any activity, flowers, bath, surma and fragrance.

धर्मामृतं सतृष्णः श्रवणाभ्यां पिबतु पाययेद्वान्यान्।
ज्ञानध्यानपरो वा भवतूपवसन्नतन्द्रालुः॥१०८॥

उत्साहित व आलस्य रहित, जब करता उपवास।
ज्ञान ध्यान में लीन हो, धर्म का अमृत पास॥५.१८.१०८॥

उपवास करने वाला आलस्य रहित व उत्साहित होकर धर्मरूपी अमृत का पान सुनते भी है और सुनाते भी है और ज्ञान ध्यान में लीन रहते हैं।

Fasting person, without laziness and with enthusiasm, listens nectar of scriptures and help others in drinking nectar of wisdom.

चतुर्हारविसर्जनमुपवासः प्रोषधः सकृद्भुक्तिः।
स प्रोषधोपवासो यदु पोष्यारम्भमाचरति॥१०९॥

एक बार प्रोषध कहा ,न आहार उपवास।
प्रोषध धारण, पारणा, हो प्रोषधोपवास॥५.१९.१०९॥

चारो आहार का सर्वथा त्याग उपवास हैं। दिन में एक बार भोजन करना प्रोषध है। उपवास की धारणा और पारणा के दिन एकासन करने से प्रोषधोपवास कहलाता है।

Completing abstaining of food is fasting. Eating once in a day is Prosadh. Prior and after the day of fasting doing prosadh is Prosadhopavas.

ग्रहणविसर्गास्तरणान्यदृष्टमृष्टान्यादरास्मरणे।
यत्प्रोषधोपवासव्यतिलिंघनपंचकं तदिदम्॥११०॥

ग्रहण विसर्जन ध्यान नहीं, बिछाया ना विचार।
अनादर या विस्मरण हो, प्रोषध में अतिचार॥५.२०.११०॥

प्रोषधोपवास शिक्षाव्रत के पाँच अतिचार: बिना देखे और बिना शोधे ग्रहण करना, विसर्जन करना, बिछाना तथा आवश्यक में अनादर करना और योग्य क्रियाओं को भूल जाना।

There are five violations of Prosadhopavasshikshavrat. Carelessly and without checking receiving, releasing, spreading, disrespecting or forgetting.

दानं वैयावृत्यं धर्माय तपोधनाय गुणनिधये।
अनपेक्षितोपचारोपक्रियमगृहाय विभवेन॥१११॥

वैयावृत्य शिक्षाव्रत है, धर्म वृद्धि के लिए दान।
तपस्वी व गुणी संत को, विधिपूर्वक सम्मान॥५.२१.१११॥

तपस्वी, गुणधारी संतो के लिए विधिपूर्वक बिना किसी अपेक्षा के धर्म की वृद्धि के लिये दान देना वैयावृत्य नाम का शिक्षाव्रत कहा जाता हैं।

Doing charity to wise saints with proper system and for increasing dharma is called vaiyavrat shikshavrat.

व्यापत्तिव्यपनोदः पदयोः संवाहनं च गुणरागात्।
वैयावृत्यं यावानुपग्रहोऽन्योऽपि संयमिनाम्॥११२॥

सेवा हो गुणी संयमी, श्रावक का उपकार।
आपत्ति को दूर करे, वैयावृत्य विचार॥५.२२.११२॥

गुणधारक संयमियों की आपत्ति को दूर करना पैरो को दबाना इत्यादि उपकार वैयावृत्य कहा जाता हैं।

Removing troubles of ascetics and serving them is called vaiyavrat.

नवपुण्यैः प्रतिपत्तिः सप्तगुणसमाहितेन शुद्धेन।
अपसूनारम्भाणा मार्याणा मिष्यते दानम्॥११३॥

सप्तगुणी पंचसून रहित, मुनि न आरम्भ मान।
आहार नवधाभक्ति से, कहते उत्तम दान॥५.२३.११३॥

नवधाभक्तिपूर्वक, सप्तगुणों (श्रद्धा, संतोष, भक्ति, विज्ञान, निर्लोभता, क्षमा, सत्य) सहित शुद्धरुप से पंच सूनों (कूटना, पीसना, झाड़ना, पानी भरना, चूल्हा जलाना) रहित व आरम्भों से रहित गुणी मुनियों को आहार आदि देने को दान कहा हैं।

Giving of food to ascetics who abstain from any activities and devoid of five householder work such as crushing, grinding, cleaning, water filling and kindling of fire) , shall be With navadhabhakti and With seven virtues (faith, satisfaction, devotion, system, no greed, forgiveness and truth)

गृहकर्मणापि निचितं कर्म कर्म विमार्ष्टि खलु
गृहविमुक्तानाम्।
अतिथीनां प्रतिपूजा रुधिरमलं धावते वारि॥११४॥

घररहित अतिथि की करे, जो सेवा और दान।
कर्म धुलते उसी तरह, लहू मिले जल जान॥५.२४.११४॥

घररहित अतिथि की दान सेवा से गृहस्थ के उपार्जित कर्म उसी तरह धुल जाते है जैसे जल से खून धुल जाता हैं।

Giving to ascetics cleanses karma as we clean blood with water.

उच्चैर्गौत्रं प्रणतेर्भोगो, दानादुपासनात्पूज्या।
भक्तेः सुन्दररुपं स्तवनात्कीर्तिस्तपोनिधिषु॥११५॥

उच्च गौत्र मुनि सम्मान से, भोग आहार का दान।
स्तुति से यश रुप भक्ति से, पूजे मिले सम्मान॥५.२५.११५॥

तपस्वी मुनियों को प्रणाम करने से उच्च गौत्र, आहारादि का दान देने से भोग, उपासना करने से सम्मान, भक्ति करने से सुन्दर रुप और स्तुति करने से यश प्राप्त होता हैं।

Bowing to ascetics leads to higher status, giving food will returned in form of consumptions, worship will lead to getting respect, devotion will lead to beauty and fame by praising their virtues.

क्षितिगतमिव वटबीजं पात्रगतं दानमल्पमति काले।
फलतिच्छायाविभवं बहुफलमिष्टं शरीरभृताम्॥११६॥

दीर्घ काल छाया मिले, वटवृक्ष बीज सुजान।
उत्तम फल मिलता रहे, श्रावक करता दान॥५.२६.११६॥

जिस प्रकार वटवृक्ष का बीज बहुत काल के पश्चात भी छाया की प्रचुरता व वैभव वाला फल देता है उसी प्रकार उत्तम दान भी इष्ट फल देता हैं।

Just as small seed of fig tree gives magnificent shade for many years, same way right charity gives good fruits over a period.

आहारौषधयोरप्युपकरणावासयोश्च दानेन।
वैयावृत्यं ब्रुवते चतुरात्मत्वेन चतुरस्त्राः॥११७॥

ज्ञानी गणधर ने कहा, दान चार प्रकार।
आवास और उपकरण, दे औषधि आहार॥५.२७.११७॥

चार ज्ञानधारी गणधर देव ने चार प्रकार के दान को वैयावृत्य कहा है। आहार, औषधि, उपकरण व आवास।

As per Jindev, Vaiyavrutya is of four types. Food, medicine, means of knowledge and shelter.

श्रीषेणवृषभसेने कौण्डेशः सूकरश्च दृष्टान्ताः।
वैयावृत्यस्यैते चतुर्विकल्पस्य मनतव्याः॥११८॥

श्रीशेण वृषभसेन भी, कौण्डेश का नाम।
कथा सूकर महान की, वैयावृत्य पहचान॥५.२८.११८॥

श्रीशेण, वृषभसेना, कौण्डेश और सूकर के दृष्टान्त चार वैयावृत्य में प्रसिद्ध मानना।

Shrishen, Vrushabhsen, Kondesh and Sukar became famous in four kind of Vaiyavrutya respectively.

देवाधिदेवचरणे परिचरणं सर्वदु:खनिर्हरणम्।
कामदुहि कामदाहिनि परिचिननयादादृतो नित्यम्॥११९॥

सब दु:ख श्रावक के हरे, वन्दन अरिहन्त धाम।
काम नष्ट व चाह मिटे, नित्य देव प्रणाम॥५.२९.११९॥

प्रतिदिन अरिहन्तादि देव के चरणों में वन्दन करने से श्रावक की मनोकामना पूर्ण होती है व काम को भस्म करती हैं।

Worshipping in the feet of Tirthankars everyday, one can fulfill his/her desires and also helps in destroying all desires.

अर्हच्चरणसपर्या महानुभावं महात्मनामवदत्।
भेकः प्रमोदमत्तः कुसुमेनैकेन राजगृहे॥१२०॥

राजगृह के मेंढक ने, पूजन हर्ष विभोर।
फूल चढ़ाया अरिहन्त को, मन में नाचा मोर॥५.३०.१२०॥

राजगृहनगर में हर्षविभोर मेंढ़क ने एकफूल के द्वारा भव्यजीवों के समक्ष अरिहन्त भगवान की पूजा की महिमा को प्रकट किया।

A joyous frog demonstrated the glory of worshipping Tirthankara by simply offering a flower.

हरितपिधाननिधाने, ह्यनादरास्मरणमत्सरत्वानि।
वैयावृत्यस्यैते व्यतिक्रमा: पंच कथ्यनते॥१२१॥

रखे ढके पत्ते हरे, वैयावृत्य अतिचार।
अनादर व अस्मरण हो, अच्छे नहीं विचार॥५.३१.१२१॥

वैयवृत्य के पाँच अतिचार: देने योग्य वस्तु को हरे पत्तों से ढकना, हरे पत्तों पर रखना, देते समय अनादर का भाव होना, भूल जाना व दूसरे के द्वारा देने पर आदर का भाव न होना।

Five violations of Vaiyavratya : giving food on green leaves, covering food by green leaves, disrespecting, forgetting, jealousy towards rival donor.

अध्याय ६ सल्लेखना - Chapter 6 Voluntary death

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च नि:प्रतीकारे।
धर्माय तनुविमोचनमाहु: सल्लेखनामार्या:॥१२२॥

उपसर्ग व दुष्काल में, बुढापा व बीमार।
तन का त्याग सल्लेखना, गणधर देव विचार॥६.१.१२२॥

गणधरदेव के अनुसार उपसर्ग में, दुष्काल में, बुढापे में व बीमारी में बिना प्रतिकार के शरीर को छोड़ देना सल्लेखना कहलाता हैं।

As per Gandhara, giving up of body due to unavoidable calamity, old age, terminal diseases etc without regret is called Sallekhana.

अन्तःक्रियाधिकरणं तपःफलं सकलदर्शिनः स्तुवते।
तस्माद्यावद्विभवं समाधिमरणे प्रयतितव्यम्॥१२३॥

सर्वज्ञ मत सल्लेखना, तप का फल पहचान।
प्रयत्न जब तक शक्ति है, समाधिमरण सुजान॥६.२.१२३॥

सर्वज्ञदेव के अनुसार अन्त समय में सल्लेखना के आश्रय को तप का फल कहा इसलिये जब तक शक्ति है तब तक समाधिमरण के विषय में प्रयत्न करते रहना चाहिए।

As per omniscient, Sallekhana in last days of life is tapa and shall be pondered upon as per ones own capacity.

स्नेहं वैरं संगं परिग्रहं चापहाय शुद्धमना:।
स्वजनं परिजनमपि च क्षान्तवा क्षमयेत्प्रियैर्वचनै:॥१२४॥

शुद्ध मन से क्षमा करे, शत्रु संगी यार।
ममत्व छोड़ मधुर वचन, सल्लेखना उद्धार॥६.३.१२४॥

शुद्ध मन से स्नेह, वैर व संगी साथी में ममत्व छोड़कर मधुर वचनों से स्व व पर जनों को सल्लेखनाधारी क्षमा करता है।

In Sallekhana one with pure mind, gives up love, hatred and attachment and forgives self and others with politeness.

आलोच्य सर्वमनेः कृतकारित मनुमतं च निर्व्याजम्।
आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निःशेषम्॥१२५॥

कपट रहित आलोचना, पंच महाव्रत पाल।
कृत कारित अनुमोदना, तजे पाप जंजाल॥६.४.१२५॥

सल्लेखनाधारी कृत, कारित व अनुमोदित समस्त पापों को छल कपट रहित आलोचना करके मरणपर्यंत पाँचों महाव्रत धारण करता हैं।

In Sallekhana one criticises self and renounces all sins without duplicity and takes five great vows with krit, karita and anumodana.

शोकं भयं अवसादं क्लेदं कालुष्यं अरतिमपि हित्वा।
सत्तवोत्साहमुदीर्य च मनः प्रसाद्यं श्रुतैरमृतैः॥१२६॥

शोक भय अवसाद नहीं, ज्ञान का रस पान।
राग द्वेष ना रति अरति, शेष नहीं अभिमान॥६.५.१२६॥

शोक, भय, विषाद, स्नेह, राग-द्वेष, अरति को छोड़ कर बल और उत्साह को प्रकट कर शास्त्ररुप अमृत द्वारा प्रसन्नचित्त मन रखे।

By giving up grief, fear, anguish, attachment, liking and disliking as per his capacity and with enthusiasm and drinks nectar of wisdom with pleasant mind.

आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्द्धयेत्पानम्।
स्निग्धं च हापयित्वा खारपानं पूरयेत्क्रमशः॥१२७॥

भोज त्याग क्रम से करे, चिकना पेय बढाय।
गर्म जल और छाछ रहे, त्याग बढ़ता जाय॥६.६.१२७॥

क्रम से अन्न आदि आहार को छोड़कर चिकने पेय को बढाना चाहिये फिर क्रम से चिकने पेय को छोड़कर गर्म पानी छांछ आदि को बढ़ाना चाहिए।

In Sallekhana one gives up food in stages and moves from solid food to milk etc and later to hot or spiced water.

खारपानह्मापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।
पंचनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत्सर्वयत्नेन॥१२८॥

गर्म जल भी त्याग करे, अपनाले उपवास।
जाप नवाकर मन्त्र का, क्रम से तन का नाश॥६.७.१२८॥

पश्चात गर्मपानी आदि का भी त्याग करके शक्ति के अनुसार उपवास करे व पूर्णरुप से पंच नमस्कार मंत्र का जाप करते हुए शरीर छोड़े।

Later one gives up water also as per his capacity and leaves body while observing fast and chanting Navkarmantra.

जीवितमरणाशंसे भयमित्रस्मृति निदान नामान:।
सल्लेखनातिचारा: पंच जिनेन्द्रै: समादिष्टा॥१२९॥

जीने मरने की इच्छा, भय या ममता तार।
भावी भोगों की इच्छा, सल्लेखन अतिचार॥६.८.१२९॥

जिनेन्द्र देव ने सल्लेखना के पाँच अतिचार कहे: जीने की इच्छा, मरने की इच्छा, भय, मित्रो का स्मरण व निदान अर्थात् आगामी भोगों की इच्छा।

As per Jinendradev there are five violations of Sallekhana: desire to live, wishing for death, fear, remembering dearones and desires for future attainments.

न:श्रेयसमभ्युदं निस्तीरं दुस्तरं सुखाम्बुनिधम्।
नि:पिबति पीतधर्मा सर्वैर्द:खैरनालीढ:॥१३०॥

मोक्ष या अहमिन्द्र बने, धर्म का अमृत पान।
सल्लेखना तप बड़ा, बिरले करते जान॥६.९.१३०॥

सल्लेखना का धर्मरुपी अमृतपान करने वाला अनन्त मोक्ष को या बहुत समय तक रहने वाले अहमिन्द्र पद को प्राप्त होता हैं।

Drinker of nectar of Sallekhana attains eternal moksha or position of Ahmindra for long time.

जन्मजरामयमरणैः शोकैर्दु:खैर्भयैश्च परिमुक्तम्।
निर्वाणं शुद्धसुखं नि:श्रेयसमिष्यते नित्यम्॥१३१॥

जन्म बुढापा से रहित, रोग मरण नहीं जाण ।
शोक दुख और भय नहीं, सदा सुखी निर्वाण॥६.१०.१३१॥

जन्म, बुढापा, रोग, मरण, शोक, दुख व भय से रहित शुद्ध सुख वाले नित्य अविनाशी निर्वाण को मोक्ष कहा हैं।

That which is free from birth, old age, disease, death, grief, pain and fear and which gives eternal bliss and pure delight is called Nirvana.

विद्यादर्शनशक्ति स्वास्थ्यप्रह्लादतृप्तिशुद्धियुजः।
निरतिशया निरवधयो निःश्रेयसमावसन्ति सुखम्॥१३२॥

ज्ञान दर्शन वीर्य सुख, शुद्ध तृप्त विश्वास।
हीन अधिक व अवधि रहित, जीव का मोक्ष
निवास॥६.११.१३२॥

केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनन्तवीर्य, अनन्तसुख, संतोष व शुद्ध तथा हीनाधिकता रहित, अवधिरहित सुखस्वरुप जीव मोक्ष में निवास करते हैं।

Fruits of Sallekhana are absolute faith, gyana, energy, renunciation, bliss, satisfaction and purity.

काले कल्पशतेऽपि च, गते शिवानां न विक्रिया लक्ष्या।
उत्पातोऽपि यदि स्यात्, त्रिलोकसंभ्रान्तिकरणपटुः ॥१३३॥

तीन लोक उत्पात मचे, बीते असंख्य साल।
सिद्ध विकार रहित रहे, मोक्ष अनन्त काल॥६.१२.१३३॥

सैकड़ों कल्पकालों के बीतने पर भी अगर तीनो लोकों में भी खलबली करने वाला उपद्रव हो तो भी सिद्धों में विकार दृष्टिगोचर नहीं होता।

No change is observed in the conditions of liberated souls even after lapse of innumerable kalas and cosmic disturbances in three lokas.

नि:श्रेयसमधिपन्नास्त्रैलोक्यशिखामणिश्रियं दधते।
निष्कट्टिकालिकाच्छवि चामीकार भासुरात्मान॥१३४॥

कीट और कालिमा रहित, सुवर्ण कान्ति समान।
शिखामणि से शोभित है, मोक्ष सिद्ध भगवान॥६.१३.१३४॥

कीट और कालिमा से रहित सुवर्ण कान्ति वाले मोक्ष को प्राप्त सिद्ध परमेष्ठी तीन लोक के अग्र भाग पर चूड़ामणि की तरह शोभा को धारण करते हैं।

Without any dirt liberated souls shine like pure gold and sits at the top of Siddhaloka like crest jewel of three worlds.

पूजार्थाज्ञैश्वर्यैर्बल परिजनकामभोगभूयिष्ठैः।
अतिशयितभुवनमद्भुत मभ्युदयं फलति सद्धर्मः॥१३५॥

काम, धन, सुख, बल, परिजन, सल्लेखना उपहार।
पूर्ण भोग अद्भुत स्वर्ग, सुख संसार निहार॥६.१४.१३५॥

सल्लेखना द्वारा उपार्जित धर्म पूजा, धन, ऐश्वर्य, बल, परिजन, काम, भोग की परिपूर्णता से अद्भूत स्वर्ग व सांसारिक सुख का फल देता हैं।

Virtues obtained by Sallekhana enables one to obtain wealth, majesty, power, attendants, objects of enjoyment in abundance in higher world.

अध्याय ७ - प्रतिमाएँ - Chapter 7 - Stages for Layman

श्रावकपदानि देवैरेकादश देशितानि येषु खलु।
स्वगुणाः पूर्वगुणैः सह संतिष्ठन्तेक्रमविवृद्धाः॥१३६॥

श्रावक ग्यारह प्रतिमा, तीर्थंकर का ज्ञान।
पूर्व गुण संग क्रम चढ़े, निश्चय से पहचान॥७.१.१३६॥

निश्चय से तीर्थंकरों द्वारा श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ कही गई है। श्रेणी में पहले वाली सभी प्रतिमाओं के गुणों के साथ चढ़ती है।

The Tirthankara has described eleven stages in a householder life. Each subsequent stage rise with previous all attributes.

सम्यग्दर्शनशुद्धः संसारशरीरभोगनिर्विण्णः।
पंचगुरुचरणशरणो दर्शन्कस्तत्त्वपथगृह्यः॥१३७॥

तत्त्वपथ शुद्ध सम्यग्दृष्टी, चरण पड़े भगवान।
विरक्त तन और भोग से, श्रावक उसको मान॥७.२.१३७॥

शुद्धसम्यग्दर्शी संसार शरीर व भोग से विरक्त पंचपरमेष्ठी के चरणों की शरण को प्राप्त तत्त्वपथ को ग्रहण करने वाला दर्शनिक श्रावक हैं।

Darsanik shravak is who distinguishes the world with absolute faith the soul, body and sensual pleasures, who has taken refuge at the feet of five perceptors and who is desirous of following true path.

निरतिक्रमणमणुव्रत पंचकमपि शीलसप्तकं चापि।
धारयते नि:शल्यो योऽसौ व्रतिनां मतो व्रतिक:॥१३८॥

पंच अणुव्रत पालन करे, श्रावक ना अतिचार।
शल्यरहित शीलव्रती, जिनवाणी में सार॥७.३.१३८॥

जो शल्यरहित, अतिचाररहित पाँच अणुव्रत व सात शीलव्रती हो वह व्रती श्रावक हैं।

Vrati Shravak is who has taken five anuvrat and seven sheelvrat and observes without obstacles and violations.

चतुरावर्त्तत्रितयश्चतु:प्रणाम: स्थितो यथाजात:।
सामयिको द्विनिषद्यस्त्रियोगशुद्धस्त्रिसन्ध्यमभिवनदी॥१३९॥

तीन आव्रत चार दिशा में, सामायिक नवकार।
त्रिसंध्या वन्दन करे, चिन्तामुक्त विचार॥७.४.१३९॥

सामायिक प्रतिमाधारी चारो दिशाओं में तीन तीन आव्रत करता है, चार प्रणाम करता है, कायोत्सर्ग में खड़ा होता है, बाहरी भीतरी चिन्ताओं से मुक्त यथायोग्य वस्त्र आदि की त्यागी होता हैं, सामायिक के आदि और अन्त में दो बार बैठ कर नमस्कार करता हैं, मन, वचन व काय से शुद्ध तीनों संध्याओं में वन्दना करता हैं।

Samayik Shravak while doing samayik in kayotsarg turns around in four directions and performs three aavart and four salutations, who is unattached internal and outer worries and possessions, does two salutes while in sitting postures, who keeps mind, body and speech in control and perform this kind of samayik 3 times in sandhyakal.

पर्वदिनेषु चतुर्ष्वपि मासे मासे स्वशक्तिमनिगुह्य।
प्रोषधनियमविधायी प्रणिधिपरः प्रोषधानशनः॥१४०॥

हर माह चारों तिथि में, प्रोषध और उपवास।
प्रोषधोपवास प्रतिमा, मन अरिहन्त का वास॥७.५.१४०॥

जो प्रत्येक माह में चारो पर्व तिथियों में एकाग्रतापूर्वक नियमनासुरा प्रोषध उपवास करता हैं वह प्रोषधोपवास प्रतिमाधारी हैं।

Proshadhopavas pratimadhari shravak does fasting with full prescribed system and concentration on two tithi (ashtami and chaturdasi) every fortnight as per moon calendar.

मूलफलशाकशाखाकरीरकन्दप्रसूनबीजानि।
नामानि योऽत्ति सोऽयं सचित्तविरतो दयामूर्तिः॥१४१॥

फल फूल व शाक लता, जमीकंद न आहार।
हो सचित्त त्याग प्रतिमा, दयामूर्ति विचार॥७.६.१४१॥

जो मूल, फल, शाक, शाखा, करीर, जमीकंद, फूल और बीजों को नहीं खाता वह सचित्त त्याग प्रतिमाधारी दया की मूर्ति हैं।

Sachittavirat shravak doesn't eat uncooked and unripe roots, friuits, greens, branches, tendrils, bulbous vegetables, flowers and seeds in an embodiment of mercy.

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्तिविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः॥१४२॥

रात्रिभुक्ति त्याग प्रतिमा, रात ना खान पान।
हर प्राणि पर दया करे, श्रावक उत्तम जान॥७.७.१४२॥

जो रात्रि में अन्न, पेय, खाद्य व लेह्य का त्याग कर देता है वह प्राणियों पर दया सहित रात्रिभुक्तित्याग प्रतिमाधारी श्रावक हैं।

Ratribhuktityag pratimadhari doesn't take four kinds of food (grains, liquid, sweets, and semi liquid) after sunset and before sunset to show mercy for all kind of living beings.

मलबीजं मलयोनिं गलन्मलं पूतिगन्धि बीभत्सं।
पश्यन्नंगमनंगाद्विरमति यो ब्रह्मचारी सः॥१४३॥

मल व दुर्गन्ध से लिपटा, करे न तन से राग।
मिले ब्रह्मचर्य प्रतिमा, काम वासना त्याग॥७.८.१४३॥

जो मल से उत्पन्न शुक्राणु, मल उत्पत्ति स्थान, दुर्गन्धयुक्त व ग्लानियुक्त शरीर को देखता हुआ काम वासना से विरक्त होता है वह ब्रह्मचर्य प्रतिमाधारी है।

Brahmachari shravak perceives sperm generating place as impure, the source and channel of filth as impure and disgusting hence abstain from any kind of sexual indulgence.

सेवाकृषिवाणिज्य प्रमुखादारम्भतो व्युपारमति।
प्राणातिपातहेतो र्योऽसावारम्भविनिवृत्त:॥१४४॥

हिंसा कारी न नौकरी, विरक्त खेत व्यापार।
प्रतिमा आरम्भत्याग की, श्रावक करता पार॥७.९.१४५॥

जो हिंसा कारक नौकरी, खेती, व्यापार आदि मुख्य आरम्भ से विरक्त होता हैं वह आरम्भत्याग प्रतिमा का धारक हैं।

Arambhvirat pratimadhari renounces the undertakings involved in service, cultivation, trade and other occupations which causes violence.

बाह्येषु दशसु वस्तुषु ममत्वमुत्सृज्य निर्ममत्वरतः।
स्वस्थः सन्तोषपरः परिचितपरिग्रहाद्विरतः॥१४५॥

बाह्य परिग्रह ममत्व नहीं, आत्रस्थित ध्यान।
प्रतिमा परिग्रह त्याग की, संतोषामृत पान॥७.१०.१४५॥

जो बाहरी दस परिग्रहों में ममत्व को छोड़कर आत्मस्वरुप में स्थित, संतोष में तत्पर परिग्रहत्याग प्रतिमाधारी हैं।

Parigrahvirat shravak gives up sense of possession in 10 kinds of outer possessions and find pleasure in renunciation. Becomes steadfast in soul and develop contentment.

अनुमतिरारम्भे वा परिग्रहे ऐहिकेषु कर्मसु वा।
नास्ति खलु यस्य समधीरनुमतिविरतः स मन्तव्यः॥१४६॥

अनुमति न आरम्भ परिग्रह, लोक काम का त्याग।
श्रावक उत्तम है वही, प्रतिमा अनुमतित्याग॥७.११.१४६॥

किसी भी प्रकार के आरम्भ, परिग्रह या लोक कार्य में जिसकी अनुमति नहीं है वह अनुमतित्यागप्रतिमाधारी है।

Anumativirat shravak refrain from giving any kind of approval for worldly activities.

गृहतो मुनिवनमित्वा गुरुपकण्ठे व्रतानि परिगृह्य।
भैक्ष्याशनस्तपस्यन्नुत्कृष्टश्चेलखण्डधर:॥१४७॥

मुनिसंग व्रत व तप करे, भोजन भिक्षा माँग।
एक या दो वस्त्र पहने, प्रतिमा उद्दिष्टत्याग॥७.१२.१४७॥

घर से मुनियों के पास जाकर व्रतों को ग्रहण कर भिक्षा से भोजन करने वाला तपस्या करता हुआ, एक वस्त्र या दो वस्त्र धारण करने वाला उत्कृष्ट श्रावक उद्दिष्टत्याग प्रतिमाधारी हैं।

Uddhisttyag pratimadhari shravak, gives up home and proceed to saints and takes vows from guru. Takes food by alms and use one or two clothes.

पाप मरातिर्धर्मो बन्धुर्जीवस्य चेति निश्चिन्वन्।
समयं यदि जानीते श्रेयो ज्ञाता ध्रुवं भवति॥१४८॥

पाप जीव का शत्रु है, धर्म मित्र पहचान।
ज्ञाता हो कल्याण का, रखता आगम ज्ञान॥७.१३.१४८॥

पाप जीव का शत्रु है और धर्म मित्र है इस प्रकार निश्चय कर आगम को जानता हैं वह कल्याण का ज्ञाता होता हैं।

Excellently wise knows agam well as path of liberation and consider sin as enemy and virtue is friend.

येन स्वयं वीतकलंक विद्या दृष्टि क्रिया रत्नकरण्डभाव।
नीतस्तमायाति पतीच्छयेव सर्वार्थसिद्धिस्त्रिषु॥१४९॥

सम्यक् दृष्टि ज्ञान चरित्र से, त्रिरत्न पेटी पाय।
निर्मल जीव तीन लोक में, सर्वार्थ सिद्धि उपाय॥७.१४.१४९॥

जिसने अपनी आत्मा को निर्दोष सम्यग्ज्ञान, दर्शन व चारित्र रत्न की पेटी प्राप्त की हो उसे तीनो लोक में चारो पुरुषार्थो की सिद्धि प्राप्त होती हैं।

Right faith, right knowledge and right conduct is jewel case which manifest into purusharth siddhi.

सुखयतु सुखभूमिः कामिनं कामिनीव
सुखमिव जननी मां शुद्धशीला भुनक्तु।

कुलमिव गुणभूषा कनयका संपुनीता
ज्जिनपतिपद्पद्म प्रेक्षिणी दृष्टिलक्ष्मीः॥१५०॥

पत्नी माँ पुत्री बनकर, लक्ष्मी सुख बरसाय।
सम्यग्दर्शनरुपी लक्ष्मी, जिनभगवन भरमाय॥७.१५.१५०॥

जिनेनेद्र भगवान के चरण कमलों का दर्शन करने वाली सुख की भूमिस्वरूप सम्यग्दर्शनरूपी लक्ष्मी मुझे उस तरह सुखी करे जिस तरह सुन्दर स्त्री कामी पुरुष को करती है, शुद्धशील से युक्त मुझे उस तरह रक्षित करे जैसे माता पुत्र को रक्षित करती हैं, मूलगुणरूपी अलंकार से युक्त मुझे उस तरह पवित्र करे जैसे गुणों से सुशोभित कन्या कुल को पवित्र करती हैं।

May the right faith gives me eternal bliss as goddess lakshmi fulfils all desires, unwavering virtue protects me like mother and she sanctify me as virtuous girl shines her clan.